चन्दामामा
मई १९९४
4

Parle-G

भारत में सर्वाधिक बिकने वाले कॉमिक्स
डायमण्ड कॉमिक्स
प्राण
चाचा चौधरी जहरीला इन्सान नोरा
प्राण
बिल्लू गर्मी की छुट्टियां
अग्निपुत्र अभय और महासंग्राम
प्राण
चन्नी चाची और गर्म चाय
महाबली शाका और डायन डंकनी
जेम्स बाण्ड-20
स्पाईडर मैन-3
डायमण्ड कामिक्स डाइजेस्ट
फैण्टम-30
डायमण्ड कामिक्स डाइजेस्ट
मैण्ड्रेक-19
रसना जिन्नी कामिक
विशेष उपहार!
इस सैट के साथ अपके मनपसंद फिल्मी सितारों के हस्ताक्षर युक्त 6 पोस्टकार्ड
1994
चाचा चौधरी का रजत जयंती वर्ष
जीवन में भर लो रंग
डायमण्ड कामिक्स के संग!
अंकुर बाल बुक क्लब के सदस्य बनें और अपने जीवन में खुशियों और मनोरंजन की बहार लाएं
और कितना आसान है अपने इन प्रिय पात्रों से मिलना!
आप एक बार 'अंकुर बाल बुक क्लब' के सदस्य बन जाइए फिर न तो बार-बार आपको अपने मम्मी पापा से डायमण्ड कॉमिक्स लाने के लिए कहना पड़ेगा और न ही बार-बार अपने पुस्तक विक्रेता को याद दिलाना पड़ेगा, तब आपको यह चिन्ता भी नहीं रह जाएगी कि कहीं बुक-स्टॉल पर डायमण्ड कॉमिक्स समाप्त न हो जाएं। क्लब का सदस्य बन जाने पर आपको विशेष लाभ यह रहेगा कि आपको आगामी कॉमिक्स की सूचना भी यथा समय मिलती रहेगी।
मुफ्त उपहार!
'अंकुर बाल बुक क्लब' के सदस्य बनने पर आपको पहली वी.पी. में 'चिन्टू जोक्स' नामक पुस्तक उपहार स्वरूप मुफ्त भेजी जाएगी तथा आपके जन्मदिन पर एक विशेष उपहार भी मुफ्त भेजा जाएगा। समय-समय पर अन्य उपहार भी आपको मिलते रहेंगे।
'अंकुर बाल बुक क्लब' के सदस्य बन जाने पर आपको हर महीने वी.पी. से घर बैठे डायमण्ड कॉमिक्स प्राप्त होते रहेंगे। कहीं आने-जाने की भी जरूरत नहीं। जो डाकिया आपका कॉमिक्स पैकट लेकर आएगा, आपने केवल उसे कॉमिक्स का मूल्य ही देना है। डाक खर्च भी आपको नहीं देना पड़ेगा।
कितना सुगम है 'अंकुर बाल बुक क्लब' का सदस्य बनना!
आप केवल नीचे दिये गए कूपन को भरकर और सदस्यता शुल्क के दस रुपये डाक टिकट या मनीआर्डर के रूप में भेज दें।
हर माह छः पुस्तकें एक साथ मंगवाने पर 4/- रुपये की विशेष छूट व डाक व्यय फ्री की सुविधा दी जायेगी। हर माह हम पांच छः पुस्तकें निर्धारित करेंगे यदि आपको वह पुस्तकें पसन्द न हों तो डायमण्ड कॉमिक्स की सूची में से पांच छः पुस्तकें आप पसन्द करके मंगवा सकते हैं लेकिन कम से कम पांच से छः पुस्तकें मंगवाना जरूरी है।
आपको हर माह Choice कार्ड भेजा जाएगा। यदि आपको निर्धारित पुस्तकें पसन्द हैं तो वह कार्ड भरकर हमें न भेजें। यदि निर्धारित पुस्तकें पसन्द नहीं हैं तो अपनी पसन्द की कम से कम 7 पुस्तकों के नाम भेजें ताकि कोई पुस्तक उपलब्ध न होने की स्थिति में उनमें से 4 या 5 पुस्तकें आपको भेजी जा सकें।
इस योजना के अन्तर्गत हर माह की 20 तारीख को आपको वी.पी. भेजी जायेगी।
हाँ! मैं 'अंकुर बाल बुक क्लब' का सदस्य बनना चाहता/चाहती हूं और आपके द्वारा दी गई सुविधाओं को प्राप्त करना चाहता/चाहती हूं। मैंने नियमों को अच्छी तरह पढ़ लिया है। मैं हर माह वी.पी. छुड़ाने का संकल्प करता/करती हूं।
नाम
पता
डाक
जिला
पिनकोड
सदस्यता शुल्क 10 रु. डाक टिकट मनीआर्डर से भेज रहा/रही हूं।
मेरा जन्म
नोट : सदस्यता शुल्क प्राप्त होने पर ही सदस्य बनाया जायेगा।
डायमण्ड कामिक्स प्रा. लि.
2715, दरियागंज नई दिल्ली-110002
फन कॉमिक्स
अलबेले कॉमिक्स
थ्रिल कॉमिक्स
अलबेले कॉमिक्स
एक्शन कॉमिक्स
अलबेले कॉमिक्स

कॅमल

चन्दामामा

संस्थापक : 'चक्रपाणी'
संचालक : नागिरेड्डी

अनुभव - एक आदर्श कसौटी

इस वर्ष की मई २४ को बुद्ध पूर्णिमा है। कहते हैं कि राजकुमार सिद्धार्थ का जन्म पूर्णिमा के ही दिन हुआ था। (५६७ई. पू. एक और गणना के अनुसार ५६३ ई. पू.) चालीस वर्षों के उपरांत पूर्णिमा के दिन ही उनका ज्ञानोदय भी हुआ और यह अभूतपूर्व संयोग है। पुनः चालीस वर्षों के बाद पूर्णिमा के दिन ही उन्होने निर्वाण प्राप्त किया। ऐसे संयोग विरले ही होते हैं।

जब राजकुमार ने अपने इर्द-गिर्द असंतोष ही असंतोष पाया तो उन्होने अपने सुखमय जीवन का त्याग किया। प्रजा के दुखों के मूल कारण को जानने के लिए स्वयं वे लोगों के मध्य आये। दुखों, यातनाओं तथा रोगों से भरे मनुष्य जीवन की इस वास्तविकता से वे विमुख हो गये और उन्होंने इस संबंध में गंभीर रूप से सोचा-विचारा। एक बोधि वृक्ष के नीचे बैठकर तपस्या करते समय उनमें ज्ञानोदय हुआ।

अपने शिष्यों को संबोधित करते हुए उन्होने कहा "अधिकारपूर्वक तुम्हें जो बताया गया है, उसे स्वीकार मत करो। परंपरा के नाम पर कही गयी हर बात को मानने की कोई आवश्यकता नहीं है। चूंकि पुस्तक में पाया गया है, अतः उसे मान लेना कोई अनिवार्य नहीं है। यह भी आवश्यक नहीं है कि गुरु की कही हर बात मान ली जाए। कारण और अनुभव की कसौटी पर कसने के बाद ही जो स्वीकार करना है, करो"।

बुद्ध सचमुच बहुत ही व्यावहारिक व्यक्ति थे। हर एक का व्यक्तित्व इसी प्रकार की प्रवृत्तियों से भरा हुआ होना चाहिये। जानने की उत्सुकता हमारे जीवन का अभिन्न अंग होना चाहिये। अपने इर्द-गिर्द जो भी देखते हो, दूसरों से जो भी सुनते हो, जो भी अध्ययन करते हो, अपने अनुभवों की छलनी से छानने के बाद ही उसे स्वीकार करना चाहिये। छलनी में जो रह गये हैं, उन्हें अस्वीकार कर दो। अब तुम्हारे पास जो रह गये हैं, वे अपने लिए नहीं, बल्कि अन्यों के लिए और उनकी भलाई के लिए हैं।

वर्ष : ४७ | मई १९९४ | अंक : ९

एक प्रति : रु. ४ /- | वार्षिक चन्दा : रु ४८/-

समाचार-विशेषताएँ

किसानों को राजनैतिक मान्यता

जनता नववर्ष के अवसर पर एक दूसरे को बधाई देने में व्यस्त थी। ऐसे इस दिवस पर मेक्सिको के किसानों ने निरंकुश सत्ता के विरुद्ध हथियारों से लैस हो युद्ध करना आरंभ कर दिया। परिशीलकों का कथन है कि यह युद्ध बहुत ही हिंसात्मक रहा।

''हमारे पास कुछ भी बचा नहीं। सर छिपाने घर नहीं, नाम मात्र के लिए भी थोड़ी भी ज़मीन नहीं, करने के लिए काम नहीं, शिक्षा नहीं, बीमार हो जाएँ तो चिकित्सा के लिए दवाएँ नहीं, स्वास्थ्य नहीं रहा, इन कारणों से सरकार के विरुद्ध विद्रोह करने के सिवा हमारे पास कोई और चारा नहीं रह गया; कोई दूसरा मार्ग हमें दिखायी नहीं पड़ा।'' विद्रोह का नेतृत्व करनेवाले गोरिल्ला नेता कमांडेंट मार्कोस ने यों कहते हुए अपने विद्रोह का कारण स्पष्ट किया। १९१० में कृषि संबंधी जो क्रांति हुई उसका नेतृत्व किया एमिलियोन जपाटा ने। कमांडेन्ट मार्कोस का कहना है कि उन्हीं से प्रेरणा पाकर मैंने 'जपाटिस्टा नेशनल लिबरेशन आर्मी' की स्थापना की है।

दक्षिण मेक्सिको के छियापास के अधिकतर लोग ग़रीब किसान हैं। यह बहुत ही पिछड़ा हुआ प्रांत है। 'इन्स्टयूशनल रिवल्यूलशनरी पार्टी' की तानाशाही हुकूमत के हाथों यहाँ की जनता ने बहुत-से कष्ट सहे। तब के वहाँ के शासक-वर्ग ने तथा स्थानीय एस्टेटों के मालिकों न वानिकी अधिकारियों की सहायता पाकर षडयंत्र रचा और वहाँ के किसानों की भूमियों को हड़प लिया। वे किसानों की फ़सलों के लिए सही मूल्य भी चुकाते नहीं थे। जिन किसानों ने उनकी अंधाधुंधी का सामना किया, उनको मार भी डाला। अधिकारियों को खरीद लिया और हज़ारों एकड़ों

के भूमियों पर कब्जा कर लिया। बग़ावत करनेवाले जेल में ठूँस दिये गये। अधिकारियों ने खुले आम धनिकों का साथ दिया। ऐसी परिस्थिति उत्पन्न हो गयी कि शोषित किसानों के सम्मुख विद्रोह के अलावा और कोई मार्ग नहीं रह गया।

जनवरी पहली तारीख़ को अमरीका, कनाडा और मेक्सिको के बीच नाफ्टा (नार्थ अमेरिकन फ्रीट्रेड अग्रीमेंट) नामक समझौता हुआ। इस समझौते ने आग में घी का काम किया। शोषित जनता इससे और भी भड़क उठी। किसानों को डर लगा कि इस समझौते से अमेरीका की व्यर्थ, शुष्क और सड़ी वस्तुएँ तथा अनाज आदि इस देश में लाये जाएँगे और यहाँ की जनता पर ज़बरदस्ती थोपे जाएँगे। फलस्वरुप जनता ने ज़बरदस्त बग़ावत की। लगभग दो हजार किसान गोरिल्लाओं न क्रिस्टबाल, डेलास कासस, ओकासिंगों, मार्गरिट्टास, आल्ट्रा मारिनो आदि पहाड़ी प्राँतों के शहरों को तीन दिन तक अपने वश में रखा। तीन सौ गोरिल्लाओं ने क्रिस्टबाल नगरपालिका के कार्यालय को अपने अधीन कर लिया और वहाँ के फाइलों, कम्प्यूटरों, बेंचों, कुर्सियोंआदि सामग्री को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया। कुछ और स्थलों पर सरकारी दफ़्तर व भवन किसानों की कोपाग्नि में जलकर राख हो गये। १८० गोरिल्लाओं को जेल से छुड़वा भी लिया।

मेक्सिको की सेना ने आकाश तथा भूमार्ग से गोरिल्लाओं को घेरा और एक सप्ताह के अंदर उन्हें जंगलों में खदेड़ा। क़रीबन तीन सौ गोरिल्ला मुठभेड़ में मारे भी गये। गोरिल्लाओं के प्रतीकार के भय से हज़ारो लोग अपने-अपने शहर छोड़कर चले भी गये।

सरकार ने रोमन केथलिक बिषप शाम्यूल रूइस को इसका जिम्मेदार ठहराकर उसपर आरोप लगाया। लेकिन बिषप ने इस आरोप का खंडन किया और अस्वीकार भी कर दिया। परंतु बिषप ने सरकार को चेतावनी दी कि ग़रीब किसानों के प्रति उनके रुख में परिवर्तन अवश्य होना चाहिये। बिषप ने घोषणा की और स्पष्ट किया कि ग़रीब किसानों के प्रति सरकार जो रवैया अपना रही है, उसमें अवश्य ही परिवर्तन लाना होगा। उन्होने यह भी कहा कि जो सरकार देश के ग़रीब किसानों को जीवित रहने का हक़ प्रदान नहीं करती, वह सरकार नहीं कहलायी जा सकती किसान के इन मौलिक हक़ों को छीनने का अधिकार सरकार को कदापि नहीं है।

बहुत ही सालों से जो सत्तारुढ़ हैं, उन्होने अब महसूस किया कि किसानों की समस्याओं के प्रति उदासीन रहना संभव नहीं है। गोरिल्लाओं को दबाने की कार्रवाई को तात्कालिक रूप से उन्होने रोक दिया। 'जपाटिस्टा आर्मी' को एक राजनैतिक शक्ति के रूप में उन्होने स्वीकार किया। उनसे चर्चाएँ करने के लिए अपनी सम्मति प्रकट की। परिशीलकों का कहना है कि शीघ्र ही होनेवाले आम चुनावों में पक्ष तथा विपक्ष के दोनों उम्मीदवार चुनाव लड़ेंगे।

मेक्सिको-कुछ ऐतिहासिक विशेषताएँ

- संसार के अत्यधिक लोग यहाँ स्पानिश भाषा बोलते हैं।
- सोलहवीं शताब्दी तक मायाइंडियन राज्य हुआ करते थे।
- १५२०-१८२० के बीच स्पेइन देश से शासित हुआ।
- १८२१ में स्पेन से स्वतंत्रता प्राप्त की।
- १८४६-४८ अमेरीका से युद्ध
- १८४८ माया इंडियनों की बग़ावत को दबा दिया।
- १९१० जपाटा के नेतृत्व में किसानों का विद्रोह
- १९१७ नूतन संविधान बना और आधुनिक युग का प्रारंभ हुआ।
- १९२० इन्सिटिटियूशनल रिवल्यूशनरी पार्टी के हाथों में अधिकार।

नामों की बिक्री

विजयपुरी की हाट में एक बूढ़ा एक कोने में बैठा जोर-ज़ोर से चिल्लाने लगा "नाम बेचूँगा, खरीदिये महाजनो। ये नाम ऐसे वैसे नाम नहीं हैं, बहुमूल्यवान नाम हैं।" यों चिल्ला-चिल्लाकर वह लोगों का ध्यान आकृष्ट कर रहा था।

उस बूढ़े का नाम था प्रताप। उसकी एक बीमार पत्नी थी और विवाह-योग्य पुत्री। जब वह चढ़ती जवानी में था, तब राजा की सेना में सैनिक रह चुका था। एक युद्ध में उसकी टाँग कट गयी और वह अपाहिज बन गया। दुर्भाग्यवश किसी कारण से राजा के भी क्रोध का वह पात्र बना।

प्रताप को पागल समझकर लोगों में से कोई भी उसके नामों को खरीदने या कम से कम उसके बारे में जानने के लिए भी पास तक नहीं आया। जोगी छोटी-मोटी चोरियाँ करता रहता था। वह ऐसी ही चोरी की ताक में हाट में इधर-उधर घूम रहा था। उसने बूढ़े का चिल्लाना सुना तो सोचा, चलो सुन तो लें कि इसके चिल्लाने का क्या आशय है? उसने बूढ़े से पूछा "अरे बुड्ढे, दुनिया में क्या कोई ऐसा होगा, जो धन देकर नाम खरीदे"।

बूढ़ा बोला "लेकिन, जो नाम मैं बेच रहा हूँ, ये कोई व्यर्थ नाम नहीं हैं। ये बहुमूल्य नाम हैं। इस सत्य को और इसके महत्व को जाननेवाला लाखों देकर भी खरीदने को लिए सन्नद्ध होगा।" प्रताप ने कहा।

जोगी में आतुरता तीव्र हुई तो उसने बूढ़े से कहा कि बताओ तो सही, तुम्हारे नामों की ऐसी क्या विशिष्टता है।

"ये नाम मुफ़्त में कहे जानेवाले नाम नहीं हैं। हर नाम के लिए पच्चीस हज़ार अशर्फियाँ पहले ही देनी होंगी। तभी मैं ये नाम बताऊँगा।" बूढ़े ने कहा।

जोगी उसकी बातों पर हँस पड़ा और बोला "जब तक कोई नहीं जानता कि तुम्हारे बताये नाम मूल्यवान हैं, तब तक तुम्हें कोई भी फूटी कौड़ी भी नहीं देगा। तुम्हें मुझपर विश्वास हो तो

लक्ष्मण

पर उस बाघ की लाश पायी गयी। लेकिन यह पता नहीं चला कि उसे किसने मारा हैं? राजा ने अपने गुप्तचरों को भेजा और पता लगाने की कोशिश की कि बाघ को मारनेवाला वह व्यक्ति कौन है? आख़िर पर्याप्त प्रयत्न के बाद गुप्तचरी जान तो पाये कि उसका नाम चक्रधर है, लेकिन उससे नहीं मिल पाये। नाम के अनुरूप तुम अपना वेष बदलो और राजा से मिलो तो तुम्हें अवश्य ही घोषित पुरस्कार प्राप्त होगा''।

जोगी ने बिना विलंब किये अपना वेष बदल ड़ाला और राजा के दर्शन करके बोला कि मैं ही चक्रधर हूँ और मैंने ही कुछ दिनों के पहले बाघ को मारा था।

उसकी बातों पर राजा को संदेह हुआ। उसने पूछा ''तो फिर पुरस्कार लेने के लिए तुमने इतना समय क्यों लिया? क्या तुम्हें धन का मोह नहीं?''

''नहीं प्रभु, मेरे माता-पिता वृद्ध हैं। उन्हें काशी की यात्रा पर ले जाना अनिवार्य था। माता-पिता की सेवा के सम्मुख धन का क्या मूल्य? मेरे, आपके पास आने में विलंब इसी कारण से हुआ''। जोगी ने बड़े विनय से कहा।

राजा का संदेह दूर हो गया। उसने जोगी का सम्मान किया। उसे लाख अशर्फियाँ दीं। जोगी खुशी-खुशी लौटा। वादे के अनुसार प्रताप को उसे मुँह माँगा धन देना था। परंतु उसने निर्णय कर लिया कि फूटी क़ौड़ी भी नहीं दूँगा। उल्टे वह सोचने लगा कि प्रताप से कैसे दूसरा नाम भी जान लूँ।

दूसरे दिन वह प्रताप से मिला और बोला ''तुमने सच कहा है। अब तुम दूसरा नाम भी बताओ तो पच्चीस हज़ार अशर्फियाँ क्यों, जो

एक नाम मुझसे बता। उससे मेरा लाभ होगा तो यहीं आकर, तुम्हें मुँह माँगा धन दूँगा''।

प्रताप ने उसको ग़ौर से देखा और मन ही मन एक निर्णय पर आया। फिर उससे बोला ''तुम पर विश्वास करके एक नाम तुम्हें बता रहा हूँ। तुमने ईमानदारी से मेरा धन मुझे दिया तो मैं तुम्हें दूसरा नाम भी बताऊँगा।'' और फिर उसने यों कहा।

''कुछ वर्षों पहले विजयपुरी के सरहदी गाँवों में एक बाघ ने अपने आक्रमणों से लोगों को भयभीत कर दिया। वह ग्रामीणों और उनकी पशु-संपदा का नाश करने लगा। राजा ने उसका अंत करने के बहुत-से प्रयास किये, किन्तु वह विफल रहा। आखिर उसने घोषणा की कि जो बाघ को मार ड़ालेगा, उसे लाख अशर्फियाँ दी जाएँगी। इस घोषणा के चंद दिनों के बाद एक गाँव की सरहद

मिलेगा, उसमें आधा-आधा बाँट लेंगे। इससे तुम्हारी सब ज़रूरतें पूरी हो जाएँगी''।

''वादे के मुताबिक़ तुम जो धन दोगे, उसीसे अपनी बीमार पत्नी का इलाज करा पाऊँगा और अपनी पुत्री का विवाह भी। अपनी बातों से विश्वास दिलाकर तुमने अगर मुझे धोखा दिया तो मैं कही का नहीं रहूँगा। मुझे मृत्यु की शरण लेनी पड़ेगी।'' प्रताप ने कहा।

''कितने भोले हो। मेरी इतनी मदद कर रहे हो, तो भला मैं तुम्हें कैसे धोखा दूँगा। तुम्हारी बेटी क्या मेरी बेटी नहीं है? आज से मुझे पराया नहीं अपना समझ'' जोगी ने मिठास भरी ज़बान में उसे विश्वास दिलाया।

तब प्रताप ने उससे यों कहा।

''पूर्व पाँच पीढ़ियों के पहले हिमालय पर्वतों से महापात्र नामक एक महामुनि पधारे थे। वे विजयपुरी के राजा से मिले। कहा जाता है कि उन्होने राजा को आशीर्वाद देते हुए कहा कि तुम पचास साल तक राज्य पर शासन करोगे और इस शासन-काल में तुम और तुम्हारी प्रजा सुरक्षित तथा सुखी रहेगी। जाते-जाते उन्होने विजयपुरी के राजा को वचन भी दिया कि इन पचास सालों के अंदर स्वयं आऊँगा और मिलूँगा। हमारे मूर्ख महाराज समझते हैं कि उस महामुनि महापात्र ही के कारण मेरा राज्य सुस्थिर है, मेरी प्रजा सुखी है। उनका दृढ़ विश्वास है कि अवश्य ही महामुनि पधारेंगे और दर्शन देंगे। बड़ी ही आतुरता से महाराज उस महामुनि के आगमन की प्रतीक्षा कर रहे हैं। तुम वेष धारण करके राजा का दर्शन करोगे तो तुम्हें अनगिनत मूल्यवान भैंटें मिलेंगी।''

जोगी ने थोड़ा भी विलंब नहीं किया। उसने अपने केश श्वेत कर लिये और शरीर भर भस्म पोत

जोगी उसके पास आया और बोला "चोर कहीं के। तुमने तो कहा था कि मेरे पास दो ही नाम हैं" क्रोध से पूछा।

प्रताप हँसता हुआ बोला "तुमने तो बहुत बड़ा धोखा दिया है। उसके सामने इसकी क्या गिनती?"

"तब इस बार भी एक नाम बता। भगवान की क़सम ख़ाता हूँ। इस बार धोखा नहीं दूँगा।" जोगी ने कहा।

"मै थोड़े ही इतना बेवकूफ़ हूँ कि फिर से बेवकूफ़ी दुहराऊँ" जोगी ने क्रोध का नाटक करते हुए कहा।

"अच्छा, तो एक काम करो। पहले बताओ कि नाम क्या है। फिर मेरे साथ आना और राजा जो तोहफ़ा देंगे, तुम खुद अपने हाथों ले लेना।" जोगी ने उसे विश्वास दिलाते हुए कहा। वह मन ही मन ठान चुका था कि इस बार भी प्रताप को ठेंगा ही दिखाऊँगा।

प्रताप ने उसके प्रस्ताव को मान लिया और कहा "राजा से बताओ कि मेरा नाम बलभद्र है। बलभद्र महापराक्रमी, शूर और वीर है। उसका नाम सुनते ही राजा भय से थरथरा जाएँगे। इसलिए तुमसे दोस्ती का अपना हाथ बढ़ाएँगे और तरह-तरह की क़ीमतें भेंटें देंगे"।

जोगी भरे दरबार में राजा से मिला और कहा "राजन्, मैं महापराक्रमी बलभद्र हूँ"।

एक क्षण भर के लिए राजा निश्चेष्ट रह गया। आँखों के सामने अंधेरा छा गया, पर अपने को संभाल लिया। बग़ल में ही बैठे हुए मंत्री से उसने धीरे से पूछा "हमारी युद्ध संबंधी मंत्रणाएँ तथा सैन्य-संबंधी रहस्यों को शत्रुओं तक पहुँचाने के

लिया।

रुद्राक्ष माला गले में ड़ाल ली और राजा से मिला। उसने राजा से कहा कि मेरा नाम महापात्र है और मैं हिमालय से आ रहा हूँ।

यह सुनकर राजा के आनंद की सीमा नहीं रही। एक सप्ताह भर उन्होने राज्य भर में उत्सव मनवाये और मूल्यवान पुरस्कार देकर जोगी को बिदा किया।

पुरस्कारों के रूप में प्राप्त उस धन से जोगी ने नगर में एक अलीशान महल बनवाया। प्रताप की बात भूल ही गया और आराम से अपनी ज़िन्दगी गुज़ारने लगा।

कुछ दिनों के बाद जोगी के मस्तिष्क में विचार आया चलो, देखते हैं, जोगी की क्या परिस्थिति है।

प्रताप बैचैनी से उसी का इंतज़ार कर रहा था।

अपराध में हमने बलभद्र को देश से बहिष्कृत कर दिया। इसकी इतनी ज़ुर्रत कि हमारे सामने आकर हमीं से अपना नाम बता रहा है''।

मंत्री ने जोगी को नख से शिख तक देखा और बोला, ''महाराज यह व्यक्ति बलभद्र नहीं है। उसे आपने नहीं देखा, मैं देख चुका हूँ। आपके देश-बहिष्कार करने के बाद उसने फिर से देश में प्रवेश करने का दुत्साहस किया था। सरहद में तैनात सैनिकों ने उसका वध कर दिया था। उसके जीवित होने का कोई सवाल ही नहीं उठता है''। जोगी को नाराज़ी से देखते हुए मंत्री ने उससे कहा ''तुम वही आदमी हो ना, जिसे चोरी के अपराध में जेल भिजवाया गया था। जेल में जुर्म काटने के बाद अभी-अभी रिहा भी हुए। तुम्हारा नाम जोगी है ना?''

यह प्रश्न सुनते ही जोगी डर से थर-थर काँपता हुआ बोला ''क्षमा कीजिये प्रभू, यह सब कुछ उस लंगड़े का षडयंत्र हैं''।

लाठी के सहारे दरबार के कोने में खड़ा प्रताप आगे बढ़ा और राजा से कहा ''क्षमा कीजिये महाराज। मैं आपकी सेना में कभी सैनिक था। युद्ध में घायल होकर लंगड़ा हो गया हूँ।'' उसने महाराज को अपने और अपने परिवार की दीन स्थिति का विवरण दिया और कहा ''मेरे सामने कोई दूसरा रास्ता नहीं था, इसीलिए इस जोगी को आपके पास चक्रधर और महापात्र के वेष में भेजा। पर, इसने मुझे धोखा दिया। आपकी सेवा में आगे आने के लिए मुझे यह मार्ग, एक मात्र मार्ग लगा, और आख़िर इसे बलभद्र के नाम पर यहाँ भेजा। मेरे इस उपाय से यह पकड़ा भी गया और मुझे आपका दर्शन-भाग्य भी मिला।''

राजा ने प्रताप की बातें ध्यान से सुनीं। अब उन्हें यह सच्चाई भी मालूम हो गयी कि कितने ही और सैनिक युद्ध में घायल होकर लंगड़े-लूले बन गये होंगे।

उन्होने तुरंत आज्ञा दी कि ऐसे अपाहिजों को हर माह एक निश्चित रक़म दी जाए और उनकी देखभाल का सही प्रबंध हो।

एक बार जेल काटने के बाद भी जोगी ने अपनी आदतें नहीं छोड़ीं। धोखा देने के अपराध में राजा ने उसे छह साल की जेल की कड़ी सज़ा दी।
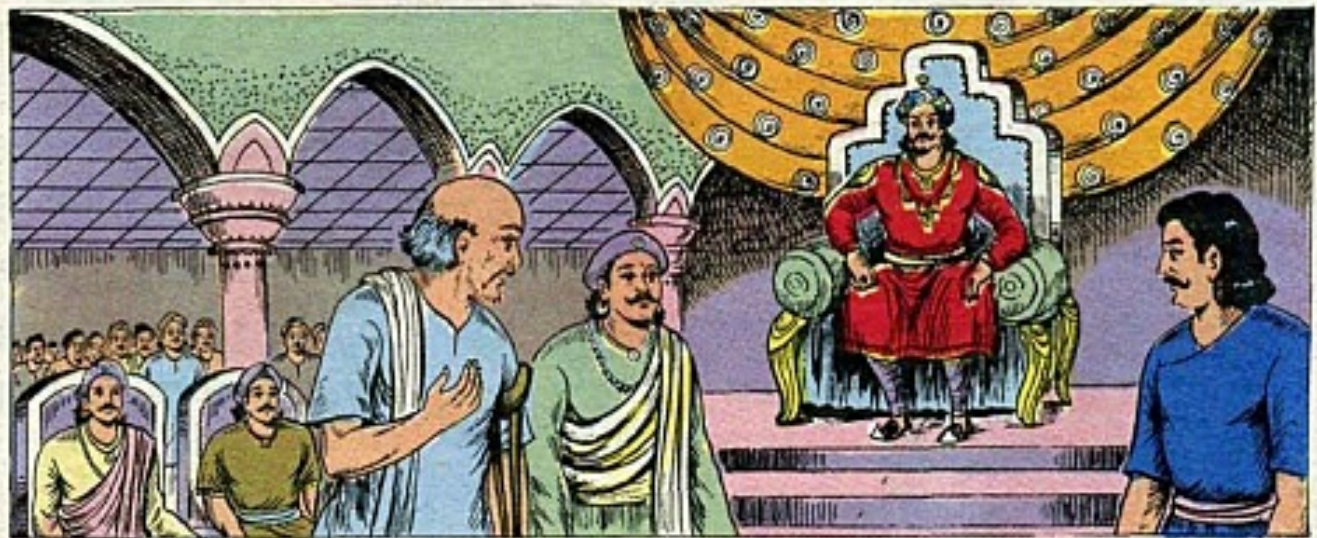
विश्वासपात्र

सीताराम एक किसान था। पशुओं की रखवाली करने और उनको चराने के लिए ले जाने उसे एक नौकर की ज़रूरत आ पड़ी। नौकर के बारे में जब वह पूछ-ताछ करने लगा तो एक युवक उसके पास आया और पूछा कि मुझे कोई नौकरी दीजिये।

"तुम अगर विश्वासपात्र हो और कड़ी मेहनत कर पाओगे तो मैं तुम्हें रख लूँगा। तुम्हें मेरे पशुओं की देखभाल करनी होगी। इसके पहले जो यह काम करता था, उसने मुझे धोखा दिया। चराने के लिए जिन गायों और बछड़ों को गाँव के बाहर ले गया, उनमें से उसने एक बछड़े को बेच डाला और मुझसे झूठ कह दिया कि बाघ ने उसे खा लिया है। आसपास के जंगलों में कोई बाघ है ही नहीं, तो भला मैं उसकी बातों का कैसे विश्वास करूँ?" वह कहता जा रहा था और साथ ही संशय से उसे देखते जाने लगा।

"महाशय, मैं ऐसा लड़का नहीं हूँ। मेरा नाम सत्यवान है" युवक ने कहा।

उसके उत्तर पर सीताराम अपने आप हँसा और बोला "सबेरे ही पशुओं को चरने जंगल मे छोड़ आया हूँ। तुम जाओ और उन्हें ले आओ। बाद निर्णय करूँगा कि तुम्हें यह नौकरी देनी है या नहीं?"।

सत्यवान जंगल गया औक सूयास्ति के होते-होते पशुओं को वापस ले आया। फिर सीताराम से कहा "महाशय, सब पशु आ गये हैं . लेकिन हाँ, काली गाय ने मुझे बहुत सताया है। वह और गायों के साथ-साथ आने को तैयार नहीं थी।" चिल्लाता हुआ वह बोला, क्योंकि उस समय सीताराम घर के अंदर था।

सीताराम की गायों में कोई काली गाय नहीं थी। उसको उसकी बातों पर आश्चर्य हुआ और वह घर के बाहर आया। सत्यवान जिस काली गाय का ज़िक्र कर रहा था, वह था बलिष्ट जंगली भैंसा।

गाय और भैंसे का फरक़ ना जाने तो क्या हुआ? विश्वासपात्र तो है। सीताराम ने सोचा कि यह अवश्य ही परिश्रमी भी होगा। उसने खुशी-खुशी सीताराम को यह नौकरी दी।

-नारायण
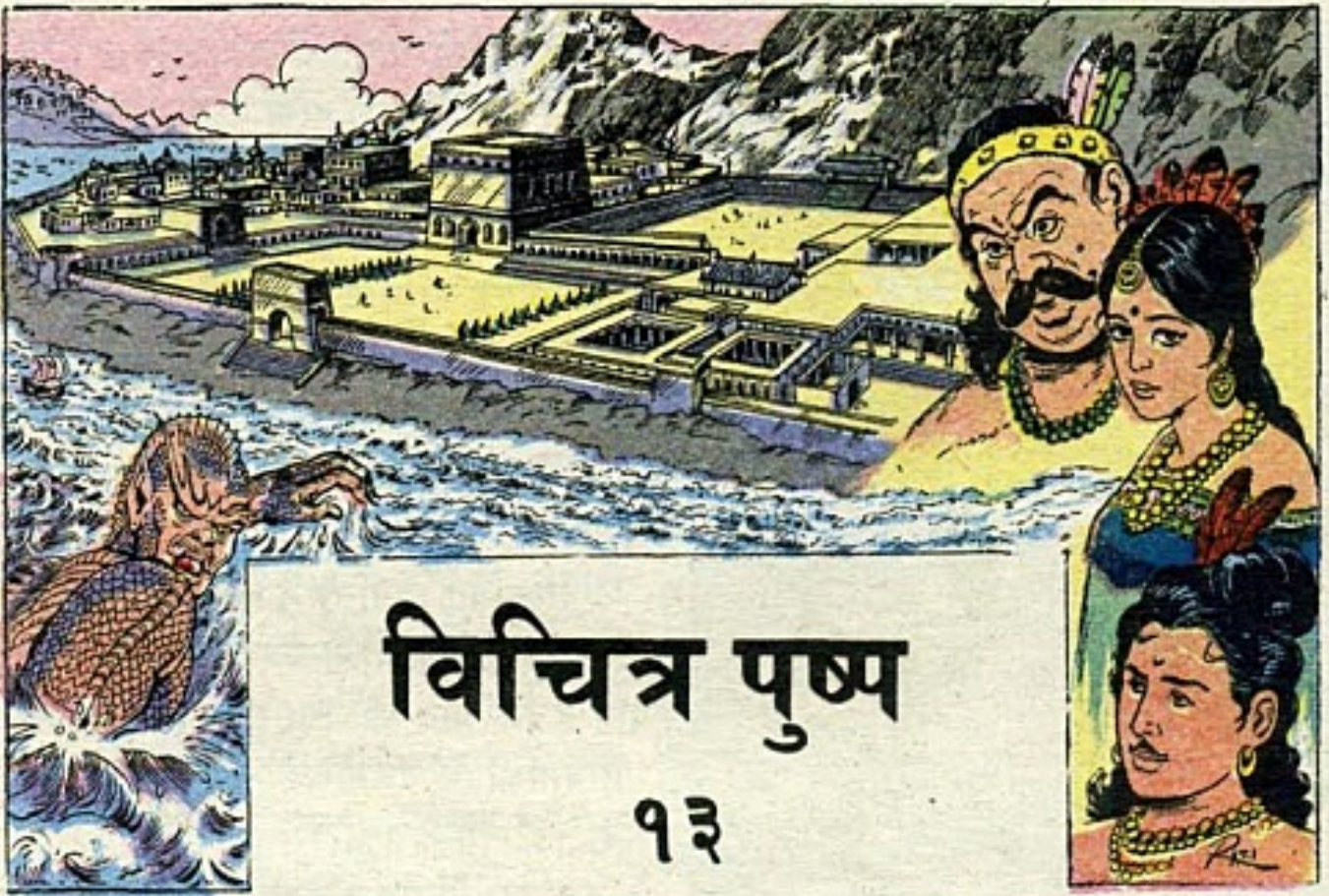
विचित्र पुष्प

१३

(राक्षस जंतु के लिए निकले उत्तुंग के साथ भेजे गये दलनायक नागसिंह ने उसे समुद्र में ढकेल दिया। उत्तुंग सुरक्षित लौटा और यह समाचार राजा को सुनाया। राजा, सेनाधिपति और सैनिकों को लेकर समुद्री तट पर पहुँचा। राक्षस जंतु नावों के पीछे-पीछे आते हुए दिखाई पड़ा। राजा और उत्तुंग के आज्ञानुसार सैनिकों ने राक्षस जंतु पर जलती हुई मशालें बाणों की तरह फेंकीं। राक्षस जंतु आग में जल उठा और नदी में डूब गया। राजा नागपुरि लौटा-बाद)

उत्तुंग और तीन सैनिक चट्टानों से नीचे उतरे और कुछ सैनिकों को लेकर समुद्री द्वार के पास पहुँचे। हाथों में मशालें लिये वे बहुत देर तक वहीं खड़े रहे। लेकिन समुद्र से कोई बाहर नहीं आया। थोड़ी देर के बाद उन्होने देखा कि कोई बड़ी मुश्किल से बाहर आ रहा है। उत्तुंग ने छलाँग मारी और उसके हाथ को ज़ोर से पकड़ लिया। उसकी कमर को हाथ का सहारा देकर ऊपर ले आया और उसे एक जगह पर बिठाया। वह सैनिक बहुत ही थका हुआ था और किसी भी क्षण उसके बेहोश हो जाने की संभावना थी। उसमें गर्मी पैदा करने के लिए उत्तुंग ने उसके पैरों और हथेली को खूब मला। थोड़ी देर बाद उस सैनिक ने आँखें खोली और पूछा "राक्षस जंतु आया था?" वह बहुत ही घबरा रहा था। उत्तुंग ने इशारे से बताया तो वह सैनिक कहने लगा "हाँ,

हाँ, वह यहाँ कैसे आ सकता है? वह समुद्र में ही जल चुका था ना! दलनायक भी मर गया है । वह दुष्ट हम लोगों को यह कहकर धमकी दे रहा था कि राक्षस जंतु को किनारे नहीं पहुँचाओगे तो तुम लोगों की मौत निश्चित है । परंतु उसी की मौत हो गयी । हमको लालच देने लगा कि मैं राजा बनूँगा तो तुम्हें काफ़ी धन दूँगा और ऊँचे-ऊँचे ओहदे भी ।इस बीच हठात् राक्षस जंतु समुद्र के गर्भ से ऊपर आया । उसे देखकर हम भयभीत हो गये । दलनायक ने 'शताब्दिका' पुष्पों को उसके सामने फेंका । लेकिन वह राक्षस जंतु अपने विशाल हाथों से नावों को पकड़ने की कोशिश करने लगा । ठीक उसी समय जलती हुई मशालें उसके शरीर पर गिरीं और वह पानी में डूब गया । फिर थोड़ी देर बाद हमारी नावों के नीचे से ऊपर उठा, हमारी नावों को उलट-पलट कर दिया और पुष्पों को चुनने लग गया । लेकिन मशालों की अग्नि को वह सह नहीं सका, जल गया और पानी में डूब गया । मालूम नहीं, दिशाहीन बाकी सिपाहियों पर क्या बीता है । मैं किसी तरह किनारे पर आ पाया ।"

"दलनायक नागसिंह ने मुझे नाव से ढ़केल दिया ।तुम्हारे आने की वजह से ही हम जान पाये हैं कि बाद को क्या हुआ है? किन्तु यह बताओ कि दलनायक नागसिंह कैसे मर गया ।"उत्तुंग ने कहा ।

तब उस सैनिक ने कहा "जब दलनायक ने 'शताब्दिका' पुष्प उसके सामने फेंके तो वह जल्दी-जल्दी उनको लेने आगे बढ़ा । उस जंतु ने नागसिंह अथवा हमारी ओर ध्यान भी नहीं दिया । नागसिंह तब ज़ोर से चिल्ला पड़ा "सिपाहियो, आगे बढ़ो । यही अच्छा मौका है । हम रस्सियों से इसे बाँध लेंगे और अपने यहाँ ले जाएँगे । उसे राजमहल में छोड़ देंगे तो यह राज-परिवार का सर्वनाश करेगा । तब मैं राज्य का राजा बन जाऊँगा ।"

हमने रस्सियाँ फेंकीं और बड़ी ही कुशलतासे उस राक्षस-जंतु को बाँध लिया । हमारे इस काम पर राक्षस-जंतु बहुत ही क्रोधित हुआ । उसने पुष्पों को चुनना छोड़ दिया और अपना पूरा बल लगाकर उन

रस्सियों को तोड़ डाला । तक्षण ही वह दलनायक पर टूट पड़ा और उसके टुकडे-टुकड़े कर दिये । यों दलनायक का शव पानी में डूब गया ।

उसकी शक्ति को देखकर हम भयभीत हो गये । हमने अपने प्राणों की रक्षा के लिए नावों को तेज़ी से चलाना शुरू कर दिया । वह हमारे पीछे-पीछे आने लग गया । अच्छा हुआ, आप लोग समय पर आये और जलती हुई मशालें उसपर फेंकीं । नहीं तो, हमारी भी दलनायक की ही जैसी बुरी हालत हो जाती ।"

"चलो, सेनाधिपति से मिलकर सारी बातें बताएँ" उत्तुंग ने कहा । सैनिक ने कहा "मैं भी आपके साथ चलता हूँ ।"

तभी सूर्योदय हो रहा था । समुद्र के किनारे को छूता हुआ एक शव उन्हें दिखायी पड़ा । उन्होंने निकट जाकर देखा । देखा कि चेहरा और बदन जल गये हैं । देखने में बहुत ही भयंकर लग रहा था । उस शव को अच्छी तरह देखने के बाद उत्तुंग ने कहा "यह राक्षस जंतु का मृत शरीर हो सकता है । यहाँ दो सैनिक खड़े रहें । मैं राजधानी जाऊँगा और यह समाचार उन्हें सुनाऊँगा ।"

उत्तुंग जब सेनाधिपति के घर पहुँचा, तब काबूई भी उन्हीं के साथ बैठा हुआ था । उसको देखते ही सेनाधिपति ने पूछा "सैनिक सकुशल किनारे पर आ गये? दलनायक का क्या हुआ?"

"दलनायक को राक्षस जंतु ने मार डाला है । आप स्वयं सुनिये कि वहाँ क्या हुआ है?" उत्तुंग ने सैनिक की ओर इशारा किया ।

सैनिक की सारी बातें सुनने के बाद सेनाधिपति ने कहा "अच्छा हुआ दलनायक नागसिंह की जल-समाधि हो गयी । लेकिन मैं नहीं समझता कि उसकी मृत्यु की ख़बर से राजा खुश होंगे । क्योंकि आख़िर वह उनका अपना साला ही तो है ।" कहते हुए वह राजा के पास गया । बाकी लोग भी उसके साथ-साथ गये ।

उत्तुंग तथा सैनिक की कही पूरी बातें सेनाधिपति ने राजा को सुनायीं । सब कुछ सुनने के बाद राजा ने उत्तुंग से कहा "माणिक्यपुरी के साथ-साथ हमारे राज्य को भी आपत्ति से तुमने उबारा है । तुम्हारा
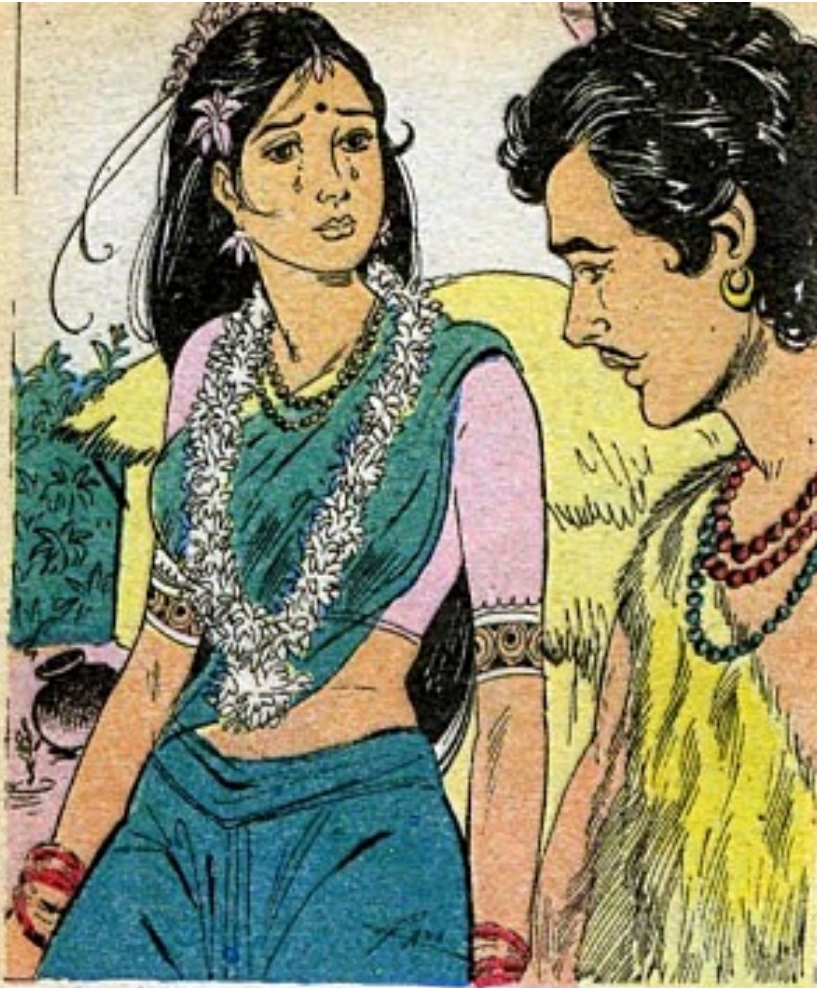
साहस सराहनीय है। तुम्हारे धैर्य-साहस युवकों के लिए आदर्श हैं।तुम्हें मंज़ूर हो तो अपनी सेना में तुम्हें दलनायक बनायेंगे? कहो।"

इतने में सेनाधिपति ने कहा " आपका विचार नितांत संगत है राजन्। उत्तुंग सेना में भर्ती हो गया तो पहाड़ी कबीलों के सब युवक, जो अब तक सेना में भर्ती होने में कोई अभिरुचि नहीं रखते थे, भर्ती हो जाएँगे।"

काबूई ने आनंद भरे स्वर में कहा "उत्तुंग दलनायक बन जाए तो हम सब का नायक भी बन जायेगा।"

उत्तुंग ने पल भर सोचा और फिर कहा "आपके प्रेम का मैं बहुत ही आभारी हूँ। आप सब लोगों को मालूम है कि मैं माणिक्यपुरी से निकलकर क्यों आया था। मेरे लोग मेरे आने की प्रतीक्षा कर रहे होंगे। मुझे वहाँ जल्दी जाने की अनुमति दीजिये। आपके प्यार, दया, सहयोग और मार्गदर्शन को कभी भी नहीं भूलूँगा।"

राजा ने उत्तुंग के हाथ पकड़ते हुए कहा "शाबाश, तुम्हारा देशाभिमान प्रशंसनीय है। जैसी तुम्हारी इच्छा। अपना देश जाओ। परंतु आज नहीं। एक दिन और ठहर जाओगे तो तुम्हारा सत्कार करके तुम्हें बिदा करूँगा।"

उत्तुंग ने सिर हिलाकर अपनी स्वीकृति दी। काबूई ने कहा "महाराज, आप अनुमति देंगें तो उत्तुंग को में अपनी बस्ती में ले जाऊँगा और हमारे लोगों को दिखा आऊँगा।"

"अवश्य, पर तुम दोनों को यहाँ कल तक लौटना होगा" राजा ने कहा। 'हाँ' कहकर काबूई उत्तुंग को लेकर अपनी बस्ती की ओर चल पड़ा। जैसे ही वे वहाँ पहुँचे, उनकी प्रतीक्षा में बैठे स्त्री-पुरुषों ने उनका स्वागत किया और डफ़लियाँ बजाते हुए नाचा। काबूई ने उत्तुंग के अभियान की सफलता का विवरण उन्हें दिया और उसे अपने घर ले गया। काबूई की पत्नी ने उनको रुचिकर भोज दिया।

रात को उत्तुंग वहीं ठहरा और विश्राम किया। सबेरे जब वह उठा तो, उसने देखा कि चित्रा पौधों को पानी दे रही है। उत्तुंग

समझ गया कि वह पौधा उसी का दिया हुआ पौधा है । वह धीरे उसके पास पहुँचा ।

चित्रा ने उसे देखकर पूछा "तुम्हारा माणिक्यपुरी लौटना क्या स्थगित किया नहीं जा सकता?"

"हाँ, मेरा जाना ज़रूरी है । वहाँ बेसब्री से वे मेरा इंतज़ार करते होंगे ।" उत्तुंग ने कहा ।

चित्रा ने पूछा "यहाँ वापस आकर हमारी सेना में दलनायक बन सकते हो ना?"

उत्तुंग की समझ में आ गया कि उसके 'दलनायक' शब्द के पीछे क्या अर्थ है ।परंतु 'ना' के भाव में उसने अपना सिर हिलाया ।

चित्रा आँसू पोंछती हुई अंदर चली गयी । उत्तुंग ने सब को हाथ जोड़कर नमस्कार किया और काबूई के साथ राजधानी चल पड़ा ।

राजभवन के पास राजा और उसका परिवार उत्तुंग की प्रतीक्षा कर रहे थे । उत्तुंग और काबूई ने राजा को नमस्कार किया । दोनों को राजा अंदर ले गया । वहाँ बहुत-से लोग जमा थे । राजा ने उसे आसन पर बिठाया और सबको उत्तुंग का परिचय दिया ।सब उत्तुंग को ध्यान से देखने लगे । उत्तुंग उठ खड़ा हुआ और सभी उपस्थित लोगों को विनयपूर्वक नमस्कार किया । पूरा भवन तालियों की गड़गड़ाहट से गूँज उठा ।

राजा उत्तुंग के पास आकर बोला "उत्तुंग, तुम्हारा साहस तथा देश-प्रेम सराहनीय हैं । मैं हृदयपूर्वक तुम्हें बधाई दे रहा हूँ ।"
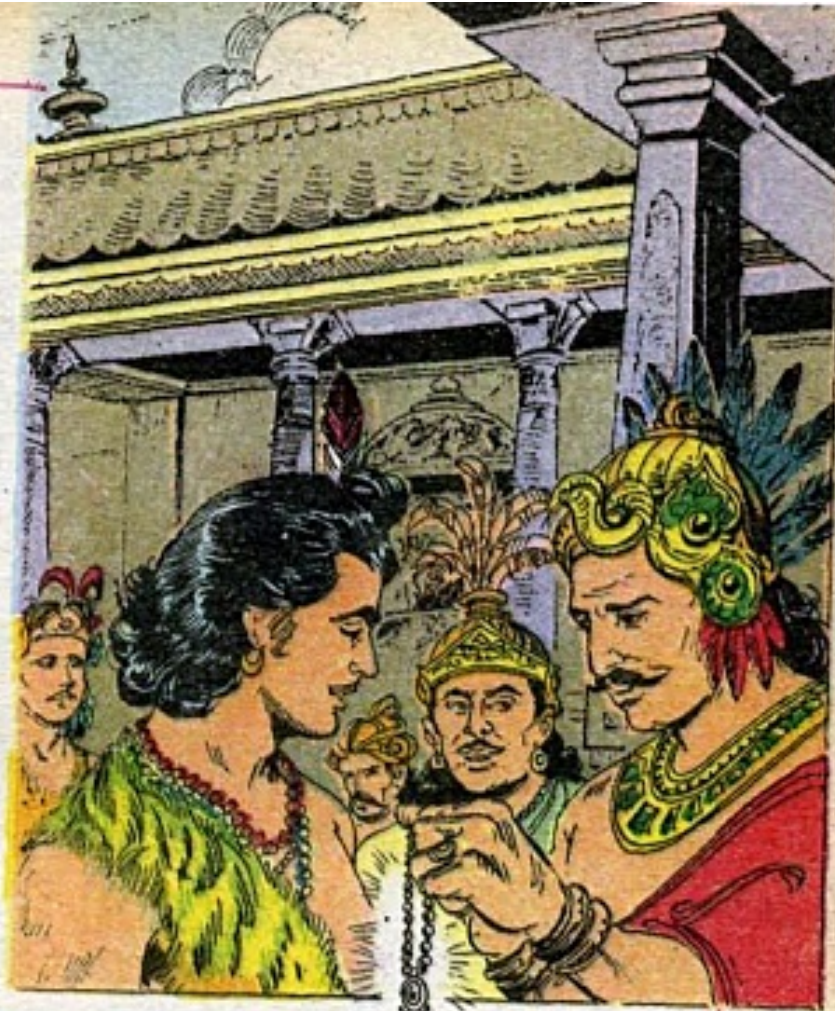
कहते हुए उसने अपना कंठहार उसके गले में डाल दिया और प्रेम से उसे आलिंगन में लिया ।

उत्तुंग ने राजा और रानी को नमस्कार किया । जब वह राजकुमारी मल्लिका के पास गया तो उसने यह कहकर उसे धन्यवाद दिया कि तुमने हमारे देश को दो राक्षस जंतुओं से बचाया है ।

उत्तुंग ने सेनाधिपति को नमस्कार किया और जाने की अनुमति माँगी । सेनाधिपति ने कहा "राक्षस जंतु को हमने समुद्र के किनारे पर ही गाड़ दिया है । दो नावों में हमारे सैनिक तुम्हारे साथ माणिक्यपुरी तक आयेंगे । वे समुद्री तट पर तुम्हारा इंतज़ार कर रहे हैं । काबूई समुद्र के तट तक आकर
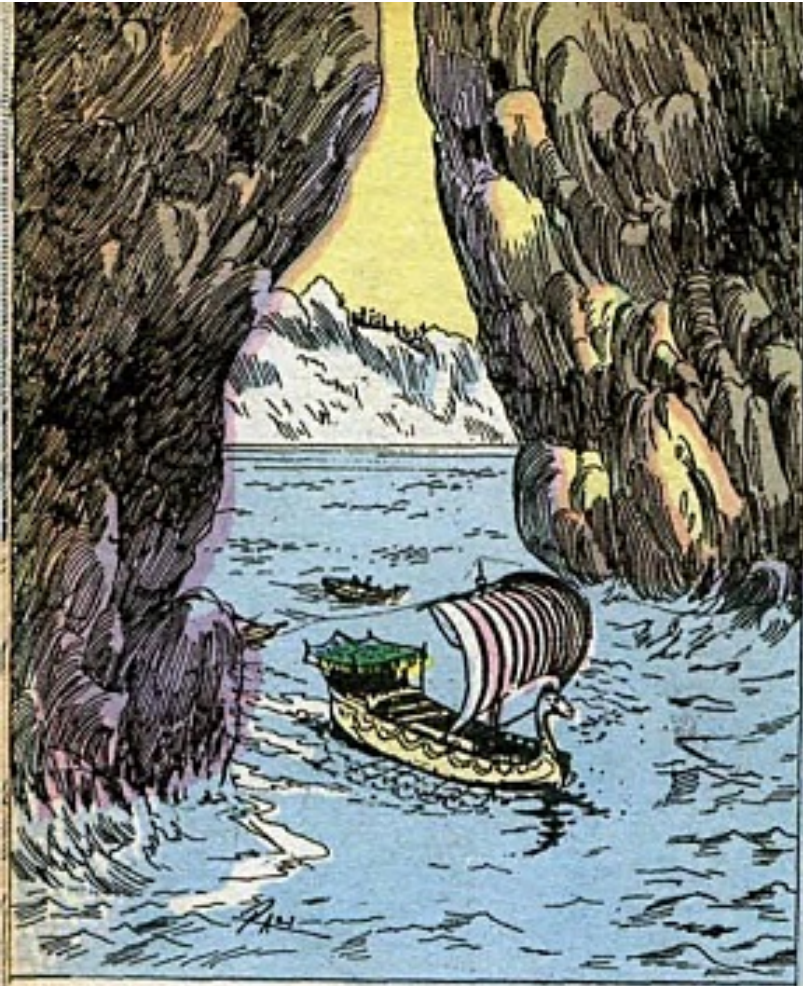
तुम्हें बिदा करेगा । अपने राजा को हमारी शुभाकांक्षाएँ बताना ।"

उत्तुंग फिर से सबको प्रणाम करके काबूई के साथ चल पड़ा । सब लोग आदरपूर्वक खड़े हो गये । काबूई ने प्यार से उत्तुंग का हाथ अपने हाथ में लिया । दोनों समुद्र की ओर चल पड़े ।

समुद्री तट पर पहुँचने पर उन्होंने देखा कि उत्तुंग की नाव विभिन्न पुष्पों से सजायी गयी है । नाव बहुत से पुरस्कारों तथा फलों से भरी हुई है ।

काबूई की बेटी चित्रा अपनी सहेलियों के साथ वहाँ आयी और 'शताब्दिका' पुष्पों को दिखाती हुई बोली "लहरें इन पुष्पों को तट पर ले आयी हैं । ये हमें वहीं मिले हैं" हँसती हुई बोली ।

"बहुत अच्छी बात है । इनमें से कुछ फूल मेरी तरफ़ से राजकुमारी मल्लिका को दीजियेगा ।" कहकर हँसता हुआ उत्तुंग नाव की तरफ़ बढ़ा ।

काबूई ने आखिरी बार उसे प्यार से गले लगाया । उत्तुंग जैसे ही नाव में बैठा, नाव चल पड़ी । उसके पीछे-पीछे सैनिकों के साथ दो नावें भी निकल पड़ीं । संध्या तक तीनों नावें माणिक्यपुरी के समुद्री तट पर पहुँचीं । तटवर्ती सिपाहियों ने यह समाचार तुरंत सेनाधिपति गंभीरवर्मा को बताया । यह समाचार उसने राजा को सुनाने के लिए कुछ सैनिकों को राजा के पास भेजा और स्वयं तक्षण ही समुद्र की ओर निकला । उनके आते-आते उत्तुंग नाव से उतर गया और आगे बढ़कर सेनाधिपति से कहा "राक्षस जंतु मर गया है ।"

सेनाधिपति को विश्वास ही नहीं हो रहा था, इसलिए उसने पूछा "क्या तुम्हीं ने उसको मार ड़ाला?"

"नहीं । विवरण मैं बाद बताऊँगा । पहले यह कहिये,आप सब सकुशल हैं ना? राजा, राजकुमारी और मेरी बहन कुशल हैं ना?" उत्तुंग ने पूछा ।

सबका कुशलमंगल जानने के बाद सब माणिक्यपुरी की ओर निकले । रास्ते में उत्तुंग ने सेनाधिपति को बताया कि राक्षस जंतु की मौत कैसी हुई है । जब वे राजभवन के सम्मुख पहुँचे तब राजा प्रतापवर्मा,
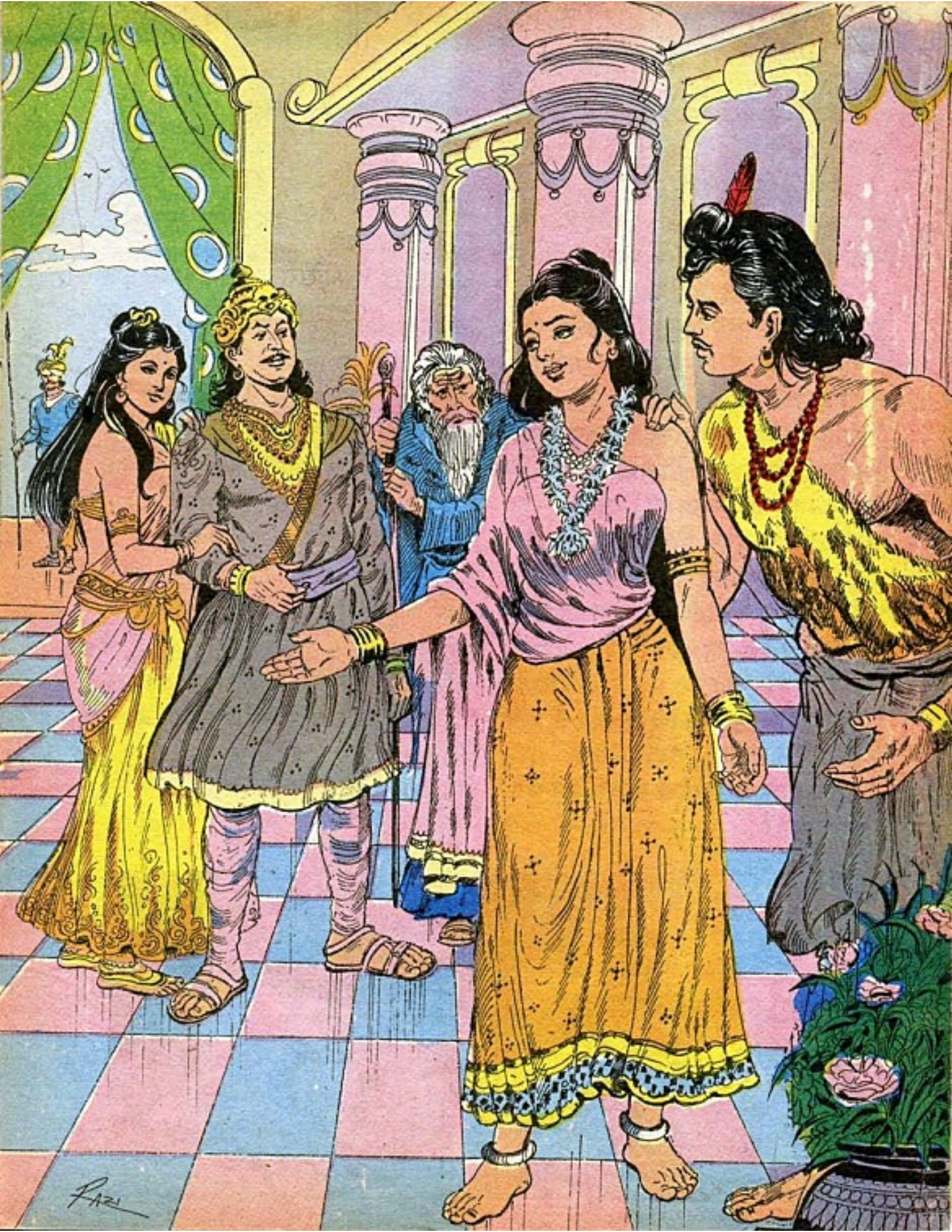
राजकुमारी प्रियंवदा तथा बहन रजनी उनकी प्रतीक्षा में खड़े थे ।

"बैरंगी माता तुम्हारी रक्षा करे" कहते हुए राजा ने उत्तुँग का हाथ अपने हाथ में लिया और उसे राजभवन के अंदर ले गया ।

"राक्षस जंतु की पीड़ा से हम कैसे मुक्त हो गये, इसका पूरा विवरण मैं तुम्हारे मुँह से सुनना चाहती हूँ ।" पीछे-पीछे आती हुई राजकुमारी ने उत्तुँग से कहा ।

राजा ने कहा "शंभु को समाचार भेजा है । किसी भी क्षण वह भी यहाँ आयेगा ।" राजा ने स्वयं उसे आसन पर बिठाया ।

दूसरे दिन राजगुरू गौरीनाथ पधारे और उत्तुँग का कहा सब कुछ सुनने के बाद उन्होने कहा "अब इसमें रत्ती भर भी संदेह नहीं कि राक्षस जंतु के मर जाने से 'शताब्दिका' पुष्प भी शाप-मुक्त हो गये हैं । अब से वे पुष्प हर साल खिल सकते हैं ।" राजकुमारी ने उत्साह भरे स्वर में पूछा "अब उन पुष्पों को हमारे बग़ीचों में विकसित कर सकते हैं ना?"

गौरीनाथ ने हँसते हुए कहा "नित्संदेह ।"

"तुम्हारी जैसी इच्छा पुत्री । उन विचित्र पुष्पों के साथ-साथ एक और मूल्यवान पुरस्कार भी तुम्हारे सुपुर्द करना चाहता हूँ" राजा ने कहा ।

प्रियंवदा आश्चर्य से अपने पिता को देखती रही । तब राजा ने कहा "तुम्हारा विवाह उत्तुँग से करना चाहता हूँ । वह प्रजा के लिए अपने प्राणों की बलि चढ़ाने के लिए भी सन्नद्ध हुआ ।उसका देशप्रेम अतुलनीय है, उसका साहस असमान है, उसका चरित्र निष्कलंक है, उसका व्यक्तित्व महान है ।उससे तुम्हारा विवाह रचाकर मैं अपना धर्म निभाना चाहता हूँ । तुम्हें स्वीकार है ना?"

प्रियंवदा ने लज्जा से अपना सर झुकाया और रजनी क हाथ थामा ।रजनी ने बहुत ही प्रसन्न हो उसका हाथ हँसते हुए अपनेभाई के हाथ में रख दिया ।

(समाप्त)

आत्माभिमान

धुन के पक्के विक्रमार्क ने पेड़ से शव को नीचे उतारा और अपनी भुजाओं पर डाल लिया । यथावत् श्मशान की ओर बढ़ा । तब शव के अंदर के बेताल ने कहा "राजन्, मैं जानता हूँ, तुम बहुत बड़े हठी हो ।अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए किसी भी संकट का सामना करने का धैर्य रखते हो । लेकिन स्मरण रहे, जिस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए तुम इतने कष्ट झेल रहे हो, उस लक्ष्य के बारे में पूरी जानकारी पाना नितांत आवश्यक है । और आवश्यक यह भी है कि उसके बारे में तुम अच्छी तरह से सोचो-विचारो । ऐसा ना करने पर तुम किसी बहकावे में आ जाओगे और हाथ आये मूल्यवान अवकाश को हाथ से जाने दोगे । वंशीकृष्ण इसका उदाहरण है ।उस भोले-भाले युवक की कहानी ध्यान से सुनो और अपनी थकावट दूर करो । फिर बेताल वंशीकृष्ण की कहानी सुनाने में लग गया ।

बैताल कथा

चंद्रशिला नगर की राजकुमारी देवदत्ता अपनी सहेलियों के साथ रथ में आसीन होकर वन विहार के लिए निकल पड़ी। थोड़ी ही देर में उन्होने जंगल में प्रवेश किया। नाना प्रकार के पक्षियों के कलरवों को सुनते हुए उसे अपार हर्ष हो रहा था। उनकी मधुर ध्वनि में वह खो गयी।

इतने में मुरली की मधुर ध्वनि कानों में गूँजने लगी। राजकुमारी क्षण भर के लिए चकित होकर उसे सुनते हुए तन्मय हो गयी। तक्षण ही वह रथ से उतरी और अपनी सहेलियों के साथ उस दिशा में बढ़ी, जहाँ से मधुर ध्वनि सुनायी दे रही थी।

बरगद के पेड़ के नीचे एक युवक आँखें मूँदे, सब कुछ भुलाये मुरली बजा रहा था। थोड़ी दूरी पर गायें चर रही थीं। राजकुमारी बिना किसी आहट के अपनी सहेलियों के साथ उस युवक के पीछे जाकर खड़ी हो गयी। कुछ समय के बाद युवक ने मुरली बजाना रोक दिया और मुरली बग़ल में रख दी।

उस समय राजकुमारी ने उसकी अपूर्व कला की प्रशंसा में तालियाँ बजायीं। युवक चौंक उठा और पीछे खड़ी स्त्रीयों को देखकर धबड़ा गया। राजकुमारी उसकी घबराहट पर मंद मुस्कुरायी।

बाद उसने युवक से कहा "तुम्हारा मुरली गायन मुझे बहुत ही अच्छा लगा है। बताओ तो सही, तुम्हारा नाम क्या है?"

"मेरा नाम वंशीकृष्ण है। इस जंगल के आंचल में जो गाँव है, वहीं मेरा गाँव है। गाँवों को चराने रोज़ यहाँ आता हूँ।" राजकुमारी के अपूर्व सौंदर्य को बिना पलक मारे देखता हुआ वंशीकृष्ण बोला।

राजकुमारी कुछ क्षण मौन रही और फिर बोली "सुनो वंशीकृष्ण, मैं इस देश की राजकुमारी हूँ। मैं तुम्हारे मुरली- गायन से उत्यंत प्रभावित हुई हूँ। तुम्हें कोई एतराज़ ना हो तो किले में आओ। मैं तुम्हारे रहने की उत्तम व्यवस्था करुँगी। तुम्हें अच्छा वेतन दूँगी। बस, तुम्हें एकमात्र कार्य करना होगा। वह है, हर दिन अपने मुरली-गायन से हमें आनंदित करना। अच्छी तरह सोचो, विचारो और निर्णय पर आना। मेरी यह भेंट स्वीकार करो तो मुझे भी आनंद

होगा" कहती हुई उसने हीरों का एक मूल्यवान हार उसे प्रदान किया ।

सूर्यास्त होनेवाला था । वंशीकृष्ण ने पशुओं को गाँव की तरफ घुमाया । देवदत्ता भी अपनी सहेलियों के साथ रथ की तरफ़ मुड़ी ।

वंशीकृष्ण उस रात को सो नहीं सका ।राजकुमारी के इर्द-गिर्द ही उसके विचार विचरने लगे । उसकी बातें ही कानों में गूँजने लगीं । आखिर उसने निश्चय किया कि गाँव छोड़ूँगा और क़िले में चला जाऊँगा ।

अपने वृद्ध पिता के साथ जब वंशी क़िले में आया तो राजकुमारी ने उसका सादर स्वागत किया । क़िले के एक विशिष्ट कक्ष में उसके बसने का प्रबंध किया गया । उस दिन से उसकी जीवन–पद्धति में ही आमूल परिवर्तन हुआ । जब राजकुमारी चाहे, तब मुरली बजाकर उसे सुनाना ही अब उसका एकमात्र काम है । इसके लिए हर महीने हज़ार अशर्फ़ियाँ उपलब्ध होती हैं । प्रियंवदा बड़े चाव से उसका मुरली-गायन सुना करती थी । वह कहती रहती थी कि तुम जैसा कलाकार शायद ही हो । बातों-बातों में उसने बताया भी था कि स्थाई रूप से तुम्हें मेरे ही पास रहना होगा । मैं तुम्हारी देख-भाल में कोई क़सर नहीं रखूँगी ।

एक दिन रविचंद्र नामक एक परदेशी महाराज के दर्शनार्थ आया ।उस परदेशी ने दावा किया कि मुरली बजाने में मैं सिद्धहस्त हूँ । देवदत्ता भी उस समय अपने पिता के बग़ल में ही बैठी हुई थी । उसने रविचंद्र से मुरली बजाने को कहा । बहुत ही अद्भुत

तक्षण महाराज ने रविचंद्र से कहा "सुनो, आज से तुम इस आस्थान के विद्वान हो । महीने में चार हज़ार अशर्फियाँ मिलेंगीं । तुम्हें कोई एतराज़ तो नहीं है ना?"

रविचंद्र अपनी इस नियुक्ति पर बहुत ही हर्षित हुआ । इस के बाद शनैः शनैः वंशीकृष्ण की प्रधानता कम होती गयी । देवदत्ता अब वंशीकृष्ण के मुरली-गायन में कोई अभिरुचि नहीं दिखा रही है ।

इन परिस्थितियों में सूर्यशीला नगर की राजकुमारी पद्मरजनी अपने विवाह का निमंत्रण-पत्र देने स्वयं चद्रशिलानगर आयी । पद्मरजनी देवदत्ता की मौसी की बेटी है । आपस में उन्होने एक दूसरे का कुशल-मंगल पूछा और कई तरह की बातें करती रहीं ।

पद्मरजनी ने सहेली के हाथों से सोने का पिंजडा अपने हाथ में लिया और कहा "दीदी, यह केवल बात ही नहीं करता बल्कि गाता भी है ।" अलावा इसके, उसने उस तोते की खासियतें बतायीं ।

तोता कुछ पल मधुर बातें करता रहा और गाया भी । देवदत्ता उस पर मुग्ध हो गयी और उसे चूमा । तब तोते ने कहा "वाह, तुम्हारा चुँबन कितना मीठा है ।" उसकी बातों पर बहनें हँसती रह गयीं ।

बहन के मनोरंजन के लिएं शाम को देवदत्ता ने बग़ीचे में मुरलीकृष्ण के गायन का प्रबंध किया । रविचंद्र किसी आवश्यक काम पर दूसरा गाँव गया हुआ था, इसलिए वंशी को यह अवसर मिला ।

ढ़ंग से उसने आधे धंटे तक मुरली बजायी । सभिकों ने उसकी वाहवाही करते हुए ज़ोर-ज़ोर से तालियाँ बजायीं । महाराज ने उसे पुरस्कार दिया और उसका सम्मान किया ।

रविचंद्र के मुरली-गायन के सम्मुख वंशीकृष्ण का मुरली-गायन देवदत्ता को फीका लगा । शास्त्रीय पद्धति में संगीत का उसका प्रस्तुतीकरण उसे बहुत ही भाया । जब रविचंद्र दरबार छोड़कर जाने लगा था तो राजकुमारी ने कहा "तुम उत्तम संगीतज्ञ हो । हमारे दरबार में रहने से इसकी शोभा में चार चाँद लग जाएँगे । हमारे लिए तुम्हारी उपस्थिति गर्व का कारण बनेगा ।" उसने फिर अपने पिता से पूछा "पिताजी, आपका क्या अभिप्राय है?"

वंशीकृष्ण का मुरली-गायन पद्मरजनी को बहुत ही अच्छा लगा। उसने पहले ही सुन रखा था कि दरबार में एक और संगीतज्ञ भी है, जिसकी सब लोग प्रशंसा करते हैं। इसलिए उसने दीदी से कहा "इतनी अच्छी मुरली बजानेवाले बहुत ही कम होते हैं। तुम्हें आपत्ति ना हो तो कल ही मुरलीकृष्ण को मेरे साथ भेजो। मेरे मनोरंजन का अच्छा प्रबंध हो जायेगा। मैने सुन भी रखा था कि दरबार में दूसरा एक और कलाकार भी है, जिसकी बड़ी प्रशंसा है। परंतु मैं इस कलाकार की कला पर बहुत ही मुग्ध हो गयी हूँ। मेरी यह प्रार्थना अवश्य स्वीकार करो दीदी।"

"अवश्य ले जाओ रजनी। लेकिन हाँ, तुम्हें अपना तोता मुझे देकर जाना होगा।" देवदत्ता ने मुस्कुराते हुए कहा।

"अवश्य। उसकी बातें और गीत सुनते-सुनते मैं भी ऊब गयी हूँ" पद्मरजनी ने कहा।

वंशीकृष्ण उनकी बातचीत चुपचाप सुनता रहा। अब उसने दखल देते हुए कहा "क्षमा कीजिये राजकुमारी। मैने कल ही अपने गाँव लौटने का निर्णय किया है।"

"शायद तुम्हें वेतन की चिंता है, किन्तु तुम उसके बारे में निश्चिंत रहो। यहाँ जो मिलता है, उसका दुगुना दूँगी। तुम्हें स्वीकार है ना?" पद्मरजनी वंशीकृष्ण को किसी प्रकार मनाने के उद्देश्य से बोली।

लेकिन वंशीकृष्ण ने दृढ़ स्वर में कहा "क्षमा कीजिये, राजकुमारी। आप चाहें कितना भी वेतन दें, मैं आप के साथ नहीं आऊँगा। और मेरा यह निर्णय अटल है।"

बेताल ने विक्रमार्क को यह कहानी सुनायी और पूछा "राजन, सूर्यशिला नगर की राजकुमारी पद्मरजनी ने वंशीकृष्ण को बहुत ही उत्तम अवकाश दिया । परंतु उसने अस्वीकार कर दिया । क्या यह वंशीकृष्ण की अनभिज्ञता तथा मूर्खता नहीं? सच कहा जाए तो उससे भी अच्छे शास्त्रीय ढंग के मुरली-गायक रविचंद्र से वह जलता है,ईर्ष्या करता है । जिस राजकुमारी देवदत्ता ने उसे दुर्ग में प्रवेश दिया, जीवन में उन्नति का पथ दर्शाया, उस राजकुमारी के प्रति उसके हृदय में कृतज्ञता की भावना ही नहीं है । अगर ऐसा नही होता तो चुपचाप पद्मरजनी के साथ चला जाता । इन सारे कारणों से लगता है कि वंशीकृष्ण ईर्ष्यालू, मूर्ख, तथा कृतघ्न है ।यह भी निर्विवाद लगता है कि दूसरों के प्रति मन ही मन उसमें जो ग़लत धारणायें हैं,उनके अधीन होकर, उनके वशीभूत होकर वह निर्णय कर लेता है । ये निर्णय अवश्य ही त्रुटिपूर्णा हैं । जानते हुए भी मेरे इन संदेहों का समाधान नहीं दोगे तो तुम्हारा सिर टुकड़ों में फट जायेगा ।"

विक्रमार्क ने उत्तर में कहा "पद्मरजनी की इच्छा को वंशीकृष्ण ने ठुकरा दिया, इसका कारण कुछ दूसरा ही है । यह कहना नितांत मूर्खता है कि गाँव लौटने का जो फ़ैसला उसने किया, वह उसने अर्थहीन आवेश के अधीन होकर किया है । देवदत्ता ने बिना उसकी राय जाने ही, उसे अपनी बहन के साथ भेज देने का निर्णय किया । इस अनुचित निर्णय ने वंशीकृष्ण के दिल को बहुत दुखाया, उसकी भावनाओं को ठेस पहुँचाया । गुलामों की इच्छाओं को नज़रंदाज़ करके मालिक उनका क्रय-विक्रय कर देते हैं । देवदत्ता ने पद्मरजनी से कहा कि अपना तोता मुझे दो और वंशीकृष्ण को तुम ले जाओ ।उनकी इस मनोवृत्ति से वंशीकृष्ण की आत्मा को क्षोभ पहुँचा । अपने आत्मगौरव तथा व्यक्तित्व की रक्षा करने के लिए उसने जाने से इनकार कर दिया । इसलिए तुमने ईर्ष्या, मूर्खता, कृतघ्नता आदि जो आरोप लगाये, निराधार हैं ।"

इस प्रकार राजा का मौन-भंग करके बेताल शव के साथ अदृश्य हो गया ।

—आर. पट्टाभि की रचना के अधार पर ।

काशीपंडित

गौरीपुर में अवधानी नामक एक काशीपंडित रहा करता था। वह बचपन में ही घर से भागा। काशी के पंडितों के यहाँ शास्त्रों का अध्ययन किया और चार वर्षों के बाद घर लौटा। चूँकि विद्याध्ययन काशी में किया, इसलिए सब उसे काशीपंडित कहा करते थे, उसका आदर करते थे। इस कारण उसमें गर्व की मात्रा हद से ज़्यादा बढ़ गयी। साथ के पंडितों की हँसी उड़ाता था, और उनकी अवहेलना करता रहता था। उसकी यह बुरी आदत ज़ोर पकड़ती गयी।

अपनी बहन को देखने के लिए वह हरिहरपुर गया। रात को, भोजन हो जाने के बाद बहन ने भाई से कहा "भैय्या, रात को मंदिर में सीता-राम कल्याण महोत्सव संपन्न होनेवाला है। इस अवसर पर सीता-राम के कल्याण का कठपुतलियों का खेल होगा। इसकी रचना तुम्हारा बहनोई ने ही की। तुम जैसे काशी के पंडित देखोगे और उसकी प्रशंसा करोगे तो, उनकी रचना का गौरव बढ़ेगा।"

अवधानी मुस्कुराया और चुप रह गया। रात को मंदिर में कठपुतली का खेल प्रारंभ हो गया। खेल के खिलाड़ियों ने अवधानी के आगमन पर उसका अभिनंदन किया।

उन्होने कहा "महोदय, हमारा ज्ञान अल्प है। आप जैसे महान पंडितों के आने से हमारा उत्साह दुगुना हो गया है: अगर कोई दोष हो तो क्षमा करें।" उन्होने निवेदन किया।

इसपर अवधानी दर्प से हुँकार भरते हुए बोला "तुम लोगों की कला पेट भरने के लिए है। फिर भी मेरे बहनोई तुम लोगों पर दया करके रचनाएँ रच रहे हैं। चूंकि रचयिता मेरे बहनोई हैं, इसलिए कुछ परिवर्तन हों, अथवा सुधार हों तो मैं सूचित करूँगा।"

खेल शुरू हो गया। पुत्र की कामना करते

हुए दशरथ के यज्ञ करने की घटना दिखायी जा रही थी । सूत्रधार ने बताया कि यागशाला में इक्कीस प्रकार के पेड़ों की लकड़ियों से बने स्तंभों को खड़ा कर दिया गया ।

बस, तड़ाक् से अवधानी उठा और बोला "क्या? यागशाला में इक्कीस प्रकार के पेड़ों की लकड़ियों से बने खंभे खड़े कर दिये गये? ठीक है, तुम्हें इक्कीसों पेड़ों के नाम बताने की ज़रूरत नहीं । कम से कम दस प्रकार के पेड़ों के नाम बताओ तो सही ।"

सूत्रधार यह सुनकर बहुत ही क्रोधित हुआ । उसने तीव्र स्वर में अवधानी से कहा "महाशय, पेट भरने के लिए हम यह खेल खेलते हैं । हाँ, हम मानते हैं कि हमारे कथन में अतिशयोक्ति है । हम जैसे अनपढ़ लोग इक्कीसों प्रकार के पेड़ों के नाम कैसे जान पायेंगे । आप जैसे पंडित इन पेड़ों के नाम बताएँगे तो भविष्य में प्रदर्शित होनेवाले इन खेलों में उनके नाम भी हम सही-सही बताएँगे ।" अवधानी चित् हो गया । उसके मुँह से एक भी बात नहीं निकली । वहीं उन पेड़ों का नाम बताना असाध्य कार्य है । वह सोच में पड़ गया कि इस अपमान से अपने को कैसे बचाऊँ?

बहनोई ने अपने साले की दुस्थिति देखी । उसने सूत्रधार से कह "हमारा साला उत्तम कोटि का काशीपंडित है । कोई ऐसा विषय नहीं, जिसे वह नहीं जानता हो । उन स्तंभों के नाम तो मैं उन्हीं से जान पाया हूँ । तुम लोगों को बता भी चुका हूँ । पेड़ों के नाम उसीसे पूछना एक पंडित का अपमान है । उसकी तो कामना थी कि उन पेड़ों के नाम आप लोग स्वयं बताएँ और अपने को समर्थ प्रमाणित करें ।इसीलिए आपसे उसने ऐसा प्रश्न किया ।" तालियों की गड़गड़ाहटों के बीच में सूत्रधार ने स्मरण करते हुए एक-एक करके उन पेड़ों के नाम बताये ।

इस घटना के बाद अवधानी का गर्व चूर-चूर हो गया । तब से वह पंडितों से विनय से बात करने लगा और सामान्य लोगों सेआदर के साथ ।उसके स्वभाव में यों आमूल परिवर्तन हो गया ।

हमारे देश के वृक्ष

आम

अप्रैल महीने में आमों का मौसम प्रारंभ होता है। अप्रैल और अगस्त के बीच ही हम पेड़ों पर आम देख सकते हैं। दिल्ली और बंबई जैसे महानगरों में इस अवधि में आम की मंडियाँ लगती हैं। आम लगभग पाँच सौ प्रकार के हैं। सुवर्ण रेखा, मल्गोबा बनगानपल्लि, नीलम आदि आम आँध्र-प्रदेश में ही नहीं बल्कि दक्षिण भारत भर में प्रसिद्ध हैं। लांग्रा, चौसा, दुषेरी आदि उत्तर प्रदेश में, तो गुलाब ख़ास बिहार में। ये बंबई और बंगाल में भी पर्याप्त मात्रा में बिकते हैं। किन्तु महाराष्ट का अल्फ़ंजो आम विशिष्ट प्रकार का है। यह क़ीमती भी है। आँध्र प्रदेश का 'तेन्नेरू' नामक आम का वज़न १.६ कि.ग्रा. है तो लंबाई २३ सें.मीटर है। यद्यपि यह राजाधिराज कहलाया जाता है किन्तु इसकी ख़ास मिठास नहीं होती।

लिन्ने नामक एक वृक्ष-शास्त्रवेत्ता अठारहवीं शताब्दी में हमारे देश आये और उन्होने हमारे देश के आम का नाम रखा 'माँगिफेरा इन्डिका'।

आम का पेड़ क़रीबन १५ मीटर की ऊँचाई तक बढ़ता हैं; समृद्ध होता है। इसकी शाखाएँ बड़ी-बड़ी होती हैं। दोनों तरफ़ों के नोकदार पत्तों की चौड़ाई ६ से. मी. और १५ से.मी. तक होती है। पीले रंग के गुच्छों में छोटे-छोटे फूल विकसित होते हैं। बड़ी गुठली इस फल के बीच में होती है। चारों और गूदा भरा हुआ होता है। देखने में यह इन्सान का दिल-सा लगता है। १४वीं.शताब्दी के सुप्रसिद्ध शायर अमीर खुसरो ने इसे 'राजफल' कहकर इसका बहुत ही सुँदर वर्णन किया है। इसके पूर्व ही महाभारत और रामायण में भी इस फल का उल्लेख है।

[संसार के हर धर्म का मूल कोई ना कोई धर्म-ग्रंथ है। कुछ धर्मों के तो अनेकों ग्रंथ हैं। वे किसी एक ही ग्रंथ के अधीन सीमित नहीं हैं। संक्षेप में यहाँ हम हर धर्म के सुप्रसिद्ध ग्रंथ के बारे में बताना चाहते हैं।]

वेद

"ऋग्वेद में भारतीय चिंतन ने उत्तुंग शिखरों का स्पर्श किया है। ऋग्वेद हमारे ही देश का नहीं बल्कि संसार का आदि ग्रंथ है। मानव की प्रतिभा की परिणति का वह सूचक है" प्रमुख भारतीय विद्वान डा. राधाकुमुद मुकर्जी का यह कथन है।

प्राचीन काल से ही संसार के विविध प्रदेशों में तरह-तरह की सभ्यताओं का उद्‌भव हुआ। किन्तु लगभग चार हज़ार वर्ष पूर्व ही हमारे देश में वेदकालीन सभ्यता का विकास हुआ। तभी वेद जैसे महान ग्रंथों की रचना हूई। यह निश्चित कह सकते हैं कि किसी दूसरी सभ्यता ने वेद जैसे महान ग्रंथो की रचना नहीं की

वेद का अर्थ है ज्ञान। सनातन ऋषि जब ध्यान-मग्न रहते थे, तब अपने मस्तिष्कों में विकसित भावों को श्लोक के रूप में उच्चरित करते थे। इसीलिए इन्हें श्रुति कहते हैं। वेद चार हैं। वे चार वेद हैं : ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद। वेदों की भाषा प्राचीन संस्कृत है।
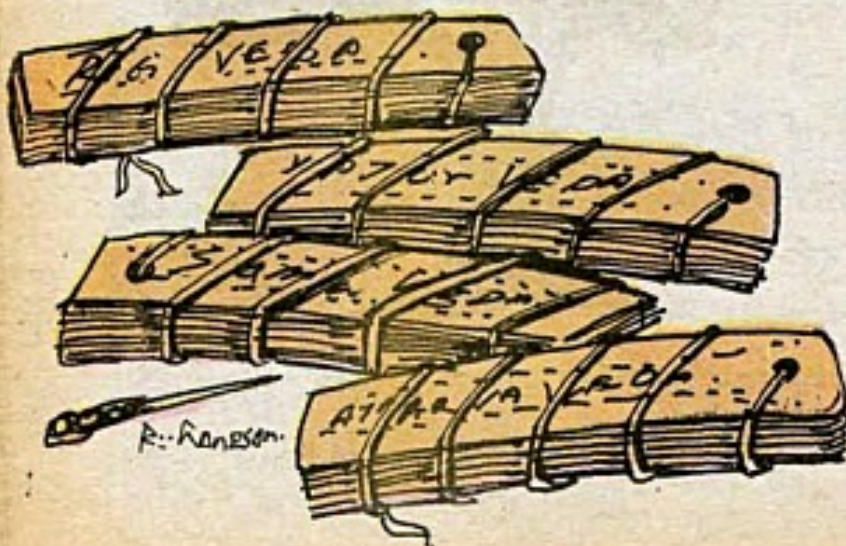
कुछ शताब्दियों तक वेद लिपि-बद्ध किये नहीं गये। गुरु जब उनको सुनाते थे तो शिष्य उन्हें श्रद्धा से सुनकर सीखते थे। वेदों को स्मरण रखने के लिए गुरु-शिष्यों ने कुछ पीढ़ियों तक कठोर अनुशासन का पालन किया।

वायु, प्रकाश, वर्षा आदि प्रकृति की शक्तियाँ हैं। इन शक्तियों के अधिदेवता हैं वायु देवता, अग्नि देवता, वरुण देवता। वेदमंत्र इन देवताओं के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हैं और उनकी प्रार्थना करते हैं। मानव-जीवन सृष्टि में महोन्नत है। ये श्लोक इस मानव-जीवन की सार्थकता बताते हैं। यह मानव जीवन दिव्य व सर्वश्रेष्ट है। वेद उन उत्तम धर्मों का बोध कराता है, जिनका आचरण मानव को करना है।

जीवन क्या है? उसका क्या परमार्थ है? मनुष्य क्यों जन्म लेता है? मृत्यु क्यों होती है? मरण के उपरांत आत्मा की क्या स्थिति है? देवता कौन होते हैं? सत्य क्या है, आदि जटिल मौलिक तात्विक प्रश्नों के समाधान वेदों के सूत्रों में स्पष्ट बताये गये हैं।

ऋषि जैसे महान बुद्धिमान ही इनका विश्लेषण कर सकते हैं। पूर्व काल में ज़िज्ञासा भरे शुद्ध प्रकृति के शिष्यों को वे ये रहस्य समझाते थे।

उत्तरोत्तर जिस सनातन धर्म का नाम हिंदू धर्म पड़ा, वेद ग्रंथ उसके आधार ग्रंथ हैं।

क्या तुम जानते हो?

प्रश्न

१) हिन्दू पुराणों के अनुसार मरा हुआ प्रथम मानव कौन था?

२) रूस और जापान के बीच जो युद्ध हुआ, उसको समाप्त करने के लिए एक अमीरीकी अध्यक्ष ने अनवरत परिश्रम किया। इस महान कार्य के लिए उनको नोबेल शांति पुरस्कार मिला। उस अध्यक्ष का क्या नाम है?

३) फिलिफैन्स कितने द्वीपों का समुदाय हैं?

४) किसने अधिक काल तक इग्लैंड पर शासन किया? कब तक?

५) बंबई का 'गेट वे आफ़ इंडिया' किस ब्रिटिष राजा के सम्मानार्थ निर्मित हुआ?

६) अमेरीका का अति प्राचीन विश्वविद्यालय कौन-सा है?

७) प्लास्टिक की खोज किसने की?

८) टर्की की बर्तमान राजधानी अंकार है। इसके पहले उसकी राजधानी का क्या नाम था?

९) दो हज़ार साल पहले एशिया के एक देश का नाम आरां था। अब उस देश का नाम क्या है?

१०) अमेरीका का अत्यंत विशाल सरोवर कौन-सा है?

११) प्राचीन बाबिलोनिया तथा ईजप्ट में 'बांकिंग' की पद्धति थी। आधुनिक 'बांकिंग' पद्धति कहाँ प्रारंभ हुई?

१२) ईसाई मत को अपनानेवाले रोम का प्रथम सम्राट कौन था?

१३) व्योमनौका से उतरकर अंतरिक्ष में चलनेवाला प्रथम व्यक्ति कौन था?

१४) 'चंडीगड' नगर को आधुनिक रूप-रेखा किस वास्तुविद् ने दी?

१५) 'इंडस' नदी का संस्कृत नाम क्या है?

उत्तर

१) यम

२) थियोडोर रूज़वेल्ट

३) सात हज़ार द्वीप

४) रानी विक्टोरिया, ६३ साल (१८३७-१९०१)

५) पाँचवाँ किंग जार्ज

६) हार्वर्ड विश्वविद्यालय (१६३६)

७) अलक्ज़ांडर पार्क

८) इस्तानबुल

९) सिरिया

१०) विक्टोरिया सरोवर

११) इटली

१२) कानस्टान्टैन सम्राट

१३) अलेक्सली लियोनोव (१९६५ में)

१४) फ्रेंच वास्तुविद् ले कार्बूनियर

१५) सिंधु नदी

निरर्थक उपाय

सदानंद कितनी ही विद्याएँ सीख चुका है । परंतु बेचारा किसी भी विद्या में प्रवीण नहीं हो पाया । वह अपने माँ-बाप की दी हुई खेती कर रहा है और अपना गुज़ारा कर रहा है ।

सदानंद का गुरु एक बार उसके पास आया । गुरु ने यह देखकर आनंद प्रकट किया कि वह खेती के काम में जुटा हुआ है ।

परंतु सदानंद ने अपनी असंतृप्ति प्रकट करते हुए कहा "गुरुवर, आपकी सिखायी हुई सारी विद्याएँ मेरे लिए निरर्थक प्रमाणित हुई हैं । खेती करने का मेरा इरादा ही नहीं हैं, लेकिन करूँ क्या? और कोई चारा भी तो नहीं है ।"

गुरु उसकी बातों पर हँस पड़ा और बोला "तुम्हारी चिंता निराधार है । तुम भुलक्कड हो । दूसरे पेशों में लग जाओगे तो उसमें धोखा खा जाने की संभावना है । खेती ही तुम्हारे लिए योग्य तथा समुचित पेशा है ।"

"नहीं गुरुजी, मेरी याददाश्त ज़बरदस्त है । मैं तो समझता हूँ कि अगर मुझमें इसकी कमी है तो यह मेरी ग़लती नहीं, बल्कि आपकी दी हुई विद्या की कमी है ।"

"मैने अपनी विद्याओं का सारांश एक छोटी पुस्तक में लिखकर दिया था । ज़रा उसे ले आओ ।" गुरु ने कहा ।

"मुझे लगा कि उस पुस्तक से मेरा कोई उपयोग नहीं होगा, इसलिए उसे अपने दोस्त को दे दिया है ।" सदानंद ने कहा ।

"अगर वह होती तो मैं तेरी बहुत मदद कर पाता । वह पुस्तक तो वापस मिलनेवाली भी नहीं है । क्योंकि 'पुस्तकं, बनिता, वित्तं परहस्तं गतं गतः' भूल गये इस सत्य को ।" गुरु ने पूछा ।

सदानंद गर्व से हँसता हुआ बोला "सब याद है । मुझे यह भी याद है कि जो पुस्तक

सुधा जोशी

किसी को दी जाए तो, उसे वापस पाने के लिए किन-किन उपायों को अमल में लाना होगा। जब चाहूँ तब वह पुस्तक वापस ले सकता हूँ।"

"चार दिनों में मैं वापस आऊँगा। इस बीच वह पुस्तक लेकर अपने पास सुरक्षित रखना" कहकर गुरु चला गया।

उसी दिन अपने दोस्त श्रीधर के पास सदानंद गया और बोला "मेरे गुरु ने समस्त विद्याओं के सार को एक पुस्तक में संक्षेप में लिख रखा है। वही पुस्तक मैंने तुम्हें दी थी। अब मुझे उसकी आवश्यकता है। तुम अगर वह लौटाओगे तो थोड़े दिन अपने पास रखकर तुम्हें दे दूँगा। मान लो, अपनी ही पुस्तक मुझे दे रहे हो और उसे लौटाना मेरा धर्म है।"

श्रीधर सोचता हुआ बोला "मैं भुलक्कड ठहरा। मुझे याद ही नहीं कि कोई ऐसी पुस्तक मैंने तुमसे ली है। आज दिन भर ढूँढूँगा और कल बताऊँगा।"

'ठीक है' कहकर सदानंद चला गया। दूसरे दिन श्रीधर से आकर मिला। श्रीधर ने बड़ी दीनता से कहा "बहुत ढूँढा, लेकिन वह किताब नहीं मिली।"

"ऐसा मत कहो। अच्छी तरह याद करो। तुमने किसी को दी होगी, शायद भूल गये। उस पुस्तक में एक रहस्य है, जिसके ज़रिये एक खज़ाना मिल सकता है। वह रहस्य क्या है, केवल मैं ही जानता हूँ। तुम वह पुस्तक मुझे किसी तरह लौटाओगे तो उस धन-राशि का एक हिस्सा तुम्हें दूँगा।" सदानंद ने कहा।

श्रीधर की पत्नी ने भी ये बातें सुनीं। दिन भर वह पुस्तक ढूँढ़ती रही और यह याद दिलाने में अपने पति की सहायता करती रही कि पुस्तक किसे दी गयी? परंतु कोई फ़ायदा नहीं हुआ। पुस्तक मिली नहीं। याद नहीं आया कि किसे दी गयी।

सदानंद ने देखा कि उसका दूसरा उपाय भी बेकार गया है तो उसने तीसरे उपाय को अमल में लाने का निर्णय किया। उसने श्रीधर के घर में काम करनेवाली नौकरानी सीता को बुलाया और उसके कानों में कुछ फूँका।

सदानंद के कहे अनुसार श्रीधर की

अनुपस्थिति में सीता ने श्रीधर की पत्नी से कहा "मालकिन, साहब ने वह पुस्तक गाँव के बाहर रहनेवाली कांता को दी है ।आपसे बताने से वे ड़र रहे हैं । किसी तरह वह पुस्तक कांता से ले आएँ और सदानंद को दे दें तो उस निधि में आपको भी हिस्सा मिलेगा ।" उसने ऐसा बताया मानों उसे उसकी भलाई के लिए ही सलाह दे रही हो ।

कांता जादू-टोना जानती है । लोगों का विश्वास है कि लोगों को अपने अधीन करने के लिए वह मंत्र-तंत्र का उपयोग करती है । ऐसी स्त्री की पति ने पुस्तक दी है, यह उस को ठीक नहीं लगा । वह पति से रूठ गयी । श्रीधर ने उसे समझाने में कोई क़सर नहीं रखी कि मैंने यह काम नहीं किया, मैं तो उस स्त्री से मिला ही नहीं । लेकिन कोई फ़ायदा नहीं हुआ ।

व्याकुल श्रीधर के सामने कोई और चारा नहीं था । वह एक दिन श्रीधर के घर गया और बोला "तुम्हारी पुस्तक ने हम पति-पत्नी के बीच में आग सुलगा दी है । तुम्हीं कोई ऐसा उपाय करो कि हम दंपति फिर से मिल-जुलकर रहें ।"

सदानंद तब नाराज़ होता हुआ बोला "मेरी पुस्तक मेरे लिए प्रधान है । तुम्हारा परिवार तितर-बितर हो जाए, छिन्नाभिन्न हो जाये, भाड़ में जाए, मेरा इससे मेरा कोई संबंध नहीं । सूर्यास्त के पहले मेरी पुस्तक मुझे नहीं लौटायी तो पहाड़ को तुम्हारे यहाँ भेजूँगा ।"

पहाड़ बहुत बड़ा पहलवान है । बलिष्ठ शरीर तथा भयानक दीखनेवाली उसकी गहरी मूँछों को देखते हुए लगता है, बकासुर का छोटा भाई है । वह सदानंद का जिगरी दोस्त है । श्रीधर उसका नाम सुनते ही थर-थर काँपने लगा । वह किसी भी क्षण उसके घर पर धावा बोल सकता है, इसलिए चुपचाप बग़ल के गाँव में बसे अपने रिश्तेदारों के यहाँ जा छिपा ।

यों चार दिन गुज़र गये । गुरु वापस आया और सदानंद से पुस्तक माँगी ।

"गुरुवर, जितना प्रयत्न करना था, किया । लेकिन मुझसे हो नहीं पाया । मैं पुस्तक पा नहीं सका" उदास सदानंद ने

कहा ।

"पहले ही मैं तुमसे बता चुका था "पुस्तकं, वनिता, बित्तं, परहस्तं गतं गतः । अर्थात पुस्तक को, स्त्री को, धन को दूसरे को दोगो, तो वह हमें वापस नहीं मिलेंगे । दूसरों के हाथों में जो गये, सो गये।तुम तो इस सत्य को भूल ही गये" गुरु ने तीव्र स्वर में कहा ।

"गुरुवर, जब देखो, आप मेरी भुलायी बात की ही याद दिलाते रहते हैं । आप तो जान जाएँगे कि आपके बताये चार उपायों को कितनी अच्छी तरह से मैने स्मरण रखा है ।" कहते हुए श्रीधर के विषय में उसने बरते सब उपायों का सविस्तार विवरण दिया । "जब फल नहीं मिला है तो विद्याओं का प्रयोग भी निरर्थक है ।" गुरु ने दीर्घ श्वास लेते हुए कहा ।

"यह मत कहिये कि मैं निरर्थक हूँ, मेरा कोई प्रयोजन नहीं । त्रुटि तो आपकी सिखायी विद्या में है ।" आक्रोश भरे सुर में सदानंद ने कहा ।

गुरु उसकी बात पर मुस्कुराया "अरे सदानंद, ये चारों दिन मैं पड़ोस के गाँव में रहा । मेरी विद्याओं से जिसने बहुत कुछ पाया वह उस गाँव में रहता है । वह वहाँ सुखी है ।उसने बड़े स्तर पर मेरा स्वागत-सत्कार किया ।तुम निरर्थक हो, भुलक्कड हो, इसका प्रमाण है यह ।" सदानंद चकित होते हुए बोला "कैसे?"

"जिस पुस्तक से तुम कुछ नहीं पा सके उसी पुस्तक से उसने बहुत कुछ पाया है । तुम निरर्थक व्यक्ति हो, लेकिन हाँ, वह मेरा शिष्य नहीं है । तुम्ही ने वह पुस्तक उसे दी थी । वह तुम्हारा दोस्त है । नाम है उसका श्रीकर । पुस्तक दी श्रीकर को और अपने सारे उपायों का प्रयोग किया श्रीधर पर । तुम्हीं बताओ कि इस स्थिति में तुम्हारी पुस्तक तुम्हारे हाथ कैसे आयेगी?" गुरु ने क्रोध जताते हुए कहा ।

सदानंद ने शरम से अपना सर झुका लिया ।गुरु और श्रीधर से क्षमा-याचना माँगी और खेती करते हुए आराम से अपनी ज़िन्दगी गुज़ारने लगा ।
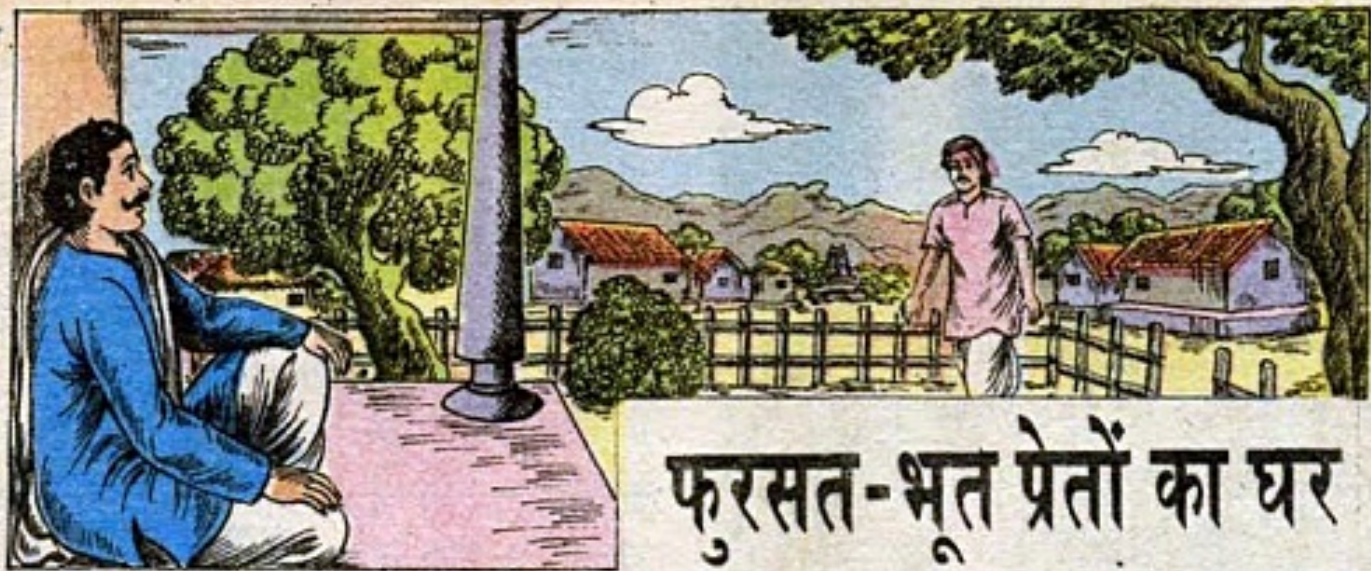
फुरसत-भूत प्रेतों का घर

कमल दुपहर का भोजन करके अपने विशाल आंगन के चबूतरे पर आराम से बैठ गया ।कहते हैं कि फुरसत ही फुरसत जब होती है तब मस्तिष्क में भूत-प्रेत चहल-पहल करने लगते हैं । कमल की भी अब यही स्थिति है । उसके दिमाग में विचित्र विचार आने-जाने लग गये ।

इतने में एक नया आदमी उसके सामने आ खड़ा हो गया । उसको देखते हुए लग रहा था कि वह बहुत ही दूर से आया हुआ है और यहाँ पहुँचने के लिए उसने कठोर प्रयास किया है । वह कमल के पास आया और पूछा "अजी, क्या यही कमल का घर है?" यह सवाल उसने बड़े विनय से किया ।

अब तक उसके मस्तिष्क में विचित्र विचार विचर रहे थे । उनमें से एक विचार को अमल में ले आने का उसने निर्णय किया । अपना सिर हिलाता हुआ बोला 'नहीं' । उस आगंतुक ने बड़ी मासूमी से पूछा "क्या यह उसका घर नहीं?"

"नहीं । कमल नामक व्यक्ति का घर गाँव की उत्तरी दिशा में जो शिवालय है, उसी के पास कहीं होगा । वहाँ जाओ और पता लगाओ" कमल ने कहा ।

'ठीक है' कहता हुआ आगंतुक उत्तरी दिशा में आगे बढ़ गया । एक घंटे के बाद वह कमल के पास आया और बोला "आपके कहे अनुसार शिवालय हो आया । वहाँ पूछ-ताछ करने पर मालूम हुआ कि वहाँ कमल नामक कोई भी आदमी नहीं है । उन लोगों का तो कहना है कि कमल का घर यहीं है ।"

"अंटसंट कुछ बकते रहते हैं । उनकी बातों का क्या भरोसा । किन्तु एक बात तो सच है ।यह कमल का घर है ही नहीं । देखो, सीधे चले जाओ । वहाँ एक तालाब

पूर्णानंद

होगा, किनारे पर बरगद का एक पेड़ भी है । वहाँ जाकर पूछो ।" कमल ने अपने ही आप हँसते हुए कहा ।

कमल के दिखाये और बताये रास्ते पर जाकर आगंतुक तालाब के पास गया । वह फिर से लौटा और बोला "तालाब के इर्द-गिर्द तो कमल नामक कोई व्यक्ति है ही नहीं । जिस किसी से भी पूछो, सब यही कहते हैं कि यहीं कमल का घर है ।"

कमल मुस्कुराते हुए बोला "बड़े ही अजीब आदमी हो । मालूम नहीं, तुम उनसे क्या पूछ रहे हो और वे क्या बता रहे हैं । पर एक बात सच मानो । यह कमल का घर है ही नहीं ।मुझे कुछ ऐसा याद है कि तालाब के किनारे बसा कमल कह रहा था कि मैं घर बदलनेवाला हूँ । शायद वहाँ का घर खाली करके कहीं और चला गया होगा । तब एक काम करो । सीधे पश्चिम की ओर चले जाओ । वहाँ गाँव की सराय है । वहाँ पूछने पर वे अवश्य ही बताएँगे ।" यों कहकर उसे भेज दिया ।

सराय की ओर गया हुआ अपरिचित व्यक्ति फिर से थका-मांदा कमल के पास आया और बोला "सराय के पास कमल नामक कोई व्यक्ति नहीं रहता । सबों का कहना है कि उसका घर यहीं है ।"

"अब तुम एक काम करो । दक्षिण की ओर जाओ, वहाँ बबूल के पेड़ हैं । वहाँ पूछ-ताछ करो ।" कमल ने कहा ।

कमल के घर की खोज में गया हुआ वह आगंतुक फिर से वापस आया ।उसके पैर थकान की वजह से डगमगा रहे थे । उसने कमल से कहा "बबूल के पेड़ों के पास गया । वहाँ के वातावरण से तो लगता है कि वहाँ भूत-प्रेत ही रहते है, मनुष्य नहीं । सब का यही कहना है कि कमल का घर यहीं है । पर आप तो बारंबार कह रहे हैं कि यहाँ है ही नहीं । घूम-घूम कर थक गया हूँ । अब और घूमने की सहनशक्ति भी नहीं । जिस काम पर आया, वह तो हुआ नहीं ।अब करूँ क्या? कमल के घर की खोज और करना मेरे लिए अब संभव नहीं है । लौटने के अलावा अब मेरे सामने कोई रास्ता नहीं है ।" कहते हुए वह आगे बढ़ा ।

कमल को लगा कि अब खेल बंद करना ही ठीक होगा। उसने कहा "मैं ही कमल हूँ और यही मेरा घर है। अच्छा, अब यह बताओ कि तुम किस काम पर आये हो?"

यह सुनते ही आगंतुक का चेहरा नाराज़ी से तमतमा उठा। पर अपने को क़ाबू में रखते हुए उसने पूछा "साहब, जब कि आप ही कमल हैं, तो अब तक मेरे बार-बार पुछने पर भी सच क्यों नहीं बताया? मुझे गाँव भर घुमाया? ऐसा क्यों?"

उसकी बातों की परवाह किये बिना मुस्कुराते हुए कमल ने कहा "मेरे मस्तिष्क में एक दिव्य विचार जागा। मैं जानना चाहता था कि इस गाँव में मुझे और मेरे घर को कितने लोग जानते हैं। अच्छा, अब तुम यह बताओ कि किस काम पर यहाँ आये हो?"

आगंतुक खड़े-खड़े झूलते हुए ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगा "साहब, जनार्दनपुर से आया हूँ। आपके लिए एक अत्यंत आवश्यक समाचार ले आया हूँ। आपके बंधु करोड़पति श्रीकंठ का देहांत हो गया है। आप जानते ही हैं कि उनके कोई बाल-बच्चे नहीं हैं। मरने के पहले आपको और दो और बंधुओं को यह समाचार सुनाने के लिए भेजा है। उन्होने मरने के पहले कहा है कि जो पहले आयेगा और उनका दाह-संस्कार करेगा, उसी को उनकी पूरी जायदाद मिलेगी। मैं उनके यहाँ काम करता हूँ। यह समाचार आपको सुनाकर पहले आपको वहाँ ले जाकर मैं आपसे बहुमूल्य पुरस्कार पाना चाहता था। आपको मालूम नहीं कि कितनी तेज़ी से दौड़ा-दौड़ा मैं यहाँ आया था। परंतु बात कुछ और ही हुई। हम तक्षण निकलेंगे भी तो कोई लाभ नहीं होगा। दो बंधुओं में से किसी ने पहले ही आकर दाह-संस्कार पूरा कर दिया होगा।" वह रोता जा रहा थाऔर कह रहा था। फुरसत के समय मस्तिष्क में जो विचार जगे, उनको अमल में लाने का फल देख लिया कमल ने।

चन्दामामा की ख़बरें

माता-पिता : सावधान

बच्चे उच्च पाठशाला की शिक्षा समाप्त किये बिना ही बीच ही में स्कूल जाना बंद कर दें तो चीन देश में दंड भुगतना पड़ेगा बच्चों को नहीं, बल्कि माता-पिता को। चीन में शिक्षा उच्च पाठशाला तक मुफ़्त है। यह अनिवार्य भी है। बच्चे अगर बीच ही में पढ़ाई बंद कर दें तो तो उनकी पढ़ाई के स्तर के अनुसार माता-पिता को एक सौ रुपये से लेकर १,६०,००० तक का जुरमाना भरना पड़ेगा। छह साल की उम्र में ही सरकार बच्चों को स्कूलों में भर्ती कर लेती है। इसके बाद नौ सालों में उच्च शिक्षा समाप्त हो जाती है। राजधानी बीजिंग में ९९ प्रतिशित बच्चे पाठशाला जाते हैं।

किफ़ायत

सटपोरे उत्तरी जापान का एक शहर है। वहाँ यह घटना घटी। किसी के दरवाजा खटखटाने की आवाज़

आयी तो उस घर की मालकिन ने दरवाज़ा खोला। जैसे ही दरवाज़ा खुला, चोर अंदर आ गया। उसने धमकी दी कि जो भी घर में हैं, ले आओ, नहीं तो मार डालूँगा। वह डर के मारे कुछ ना बोल सकी। वहीं मौजूद नौ साल की उसकी बेटी ने चोर से प्रार्थना की कि हमें हानि मत पहुँचाओ। वह घर के अंदर गयी। उसने अब तक जो रक़म जमा की थी, ले आयी। १७,००० येन (रु. ४,५००) चोर के सामनें उंडेल दिया। चोर वह रक़म लेकर भाग गया।

अति स्थूल शरीर

अमेरीका के फ्लोरिडा के फोर्टलाडर की एक स्त्री के पाँव पर चोट लगी। वह फोड़ा बन गया, जिससे उसकी जान संकट में पड़ गयी। आवश्यक चिकित्सा के लिए उसे अस्पताल ले जाने में भी कठिनाई हो गयी। उसका कारण था, उसका अति स्थूल शरीर। उसका वज़न है ३२० कि. ग्रा। दरवाज़े से बाहर ले आना भी मुश्किल हो गया। आख़िर दरवाज़ा तोड़ने के बाद ही उसे बाहर ले आ सके।

तीस साल की गुड़िया

१९४५ में अमेरीका ने हिरोषिमा और नागासाकी पर बम फेंके। इस के बाद द्वितीय विश्व-युद्ध समाप्त हो गया। वहाँ अमेरीकी सैनिकों को 'जीएस' के नाम से पुकारते थे। १९६४ में गुड़िया बनानेवाली एक संस्था ने एक सैनिक की गुड़िया बनायी, जिसका नाम रखा गया 'जीएजो'। बच्चे उस गुड़िया से बेहद आकर्षित हुए। ये गुड़िये तीस सालों से बनायी जा रही हैं। अब तक २२०,०००,००० गुड़ियों की बिक्री हुई। इस वर्ष की फ़रवरी ७ को गुड़िया बनानेवाली इस संस्या ने बड़े वैभव से जन्म-दिवस मनाया। उस उत्सव के अवसर पर जो जो आये, उनका स्वागत किया १८ मीटर के ६० फुट) लंबें और गंभीर 'जीएजो' ने।

वीर हनुमान

कौरवों के हाथों पाँडव जुए में हार गये और वनवास करने लगे । एक बार द्रौपदी भीम के साथ वन-विहार कर रही थी । बहुत ही मनोहर दीखनेवाले एक प्रदेश में स्फटिकशिला पर बैठकर दूर दिखाई देनेवाले हिमालय पर्वत के शिखरों की शोभा निहारने में मग्न थी । उस समय हवा ज़ोर से चलने लगी । उस हवा में बृहत आकार का एक अद्‌भुत पुष्प उड़ता हुआ उसकी गोद में आ गिरा । उसकी सुँगंधि से वह सारा प्रदेश सुगंधित हो उठा । उसकी अनगिनत पंखुडियाँ थी । वे कुछ मसले हुए दिख रहे थे ।

वह सुगंधि से भरा कमल था । कुबेर के नगर अलकापुरी के निकट के एक सरोवर में प्रति दिन एक ही पुष्प मात्र विकसित होता था । कुबेर प्रति दिन उस पुष्प को अपने पुष्पक विमान में ले जाता और उस पुष्प से शिव की पूजा किया करता था । पिछले दिन जिस पुष्प से वह पूजा करता था, उसे दूसरे दिन अपने यहाँ ले जाया करता था । ऐसा ही एक पुष्प ऊपर से गिरकर हवा में उड़ता हुआ द्रौपदी की गोद में आ गिरा ।

द्रौपदी ने आश्चर्य से उसे देखा और उस पर मुग्ध हो गयी । बड़े प्यार से उसने भीम से कहा कि ऐसा ही एक नवीन पुष्प मेरे लिए ले आओ । भीम ने गदा भुजा पर ड़ाल ली और निकल पड़ा । भीम चलते–चलते हिमालयों के नीचे स्थित कदली वन में जाने

लगा। उसी वन में श्रीकृष्ण की आज्ञा के अनुसार हनुमान एक केले के पेड़ के पास वृद्ध के रूप में पाँव फैलाये बैठा हुआ था। वह राम नाम के स्मरण में मग्न था। उसकी पूँछ रास्ते में रुकावट बनी पड़ी हुई थी। भीम ने पूँछ देखी और सोचा कि यह किसी बंदर की पूँछ है। वह पूँछ को पार करके जा तो सकता था, किन्तु उसके अहंभाव ने उसे ऐसा नहीं करने दिया। उसने ध्यान से इधर-उधर देखा। उसने देखा हनुमान को, जो राम नाम का स्मरण करते हुए झपकी ले रहा था। तक्षण भीम ने अपने पाँवों से भूमि को भी कंपा देनेवाली ध्वनि की। अपनी इस ध्वनि से वह वानर को भयभीत करना चाहता था।
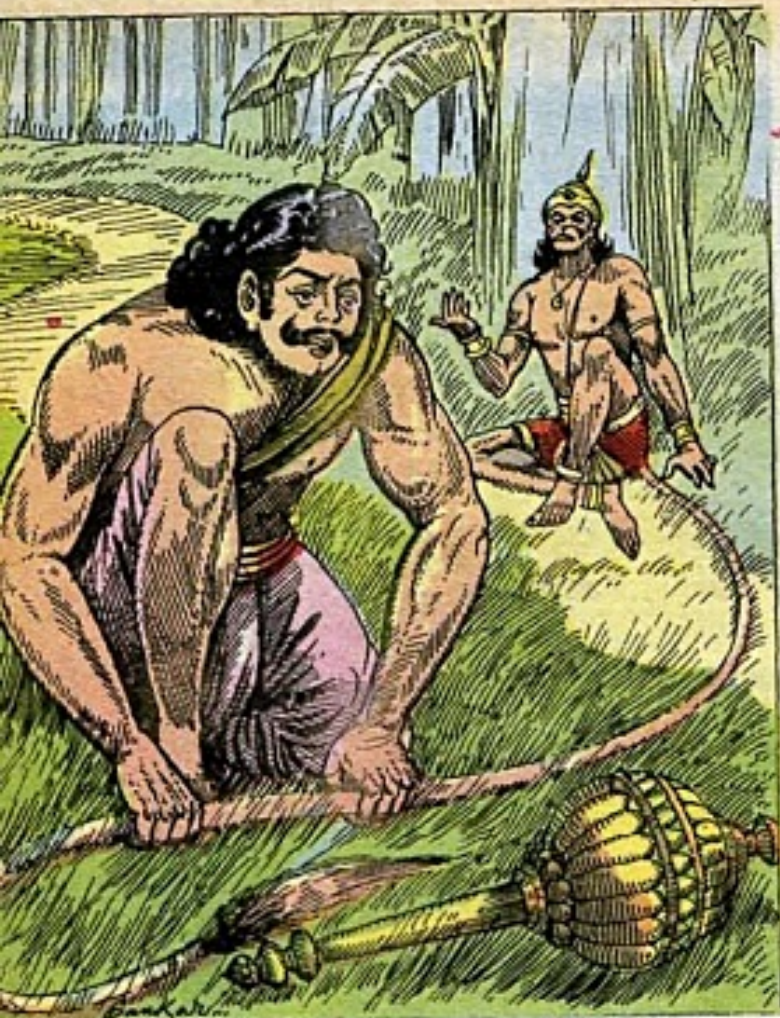
हनुमान नीरस स्वर में बोला "पुत्र, मैं वृद्ध हूँ, शक्ति नहीं रह गयी है। उठना मेरे लिए कठिन होगा, अतः तुम्हीं उस पूँछ को उठा देना और पार्श्व में रख देना।"

भीम ने गदा नीचे रखी और पूँछ देखी। उसने पूँछ को पार्श्व में रखना चाहा, पर वह पूँछ रत्ती भर भी नहीं हिली। दोनों हाथों से उसे वहाँ से हटाने का भरसक प्रयत्न किया। पर उसका प्रयत्न सफल नहीं हुआ।

हनुमान झुँझलाता हुआ बोला "अरे पुत्र, मेरी पूँछ को अपने हाथों से कसकर पकड़े मुझे क्यों कष्ट पहुँचा रहे हो? एक वृद्ध वानर की पूँछ को हटा नहीं पा रहे हो। तुम्हें देखते हुए लगता है कि गदा भुजा पर ड़ाले किसी महान कार्य को साधने के लिए चल पड़े हो। तुम युवकों में आवेश अधिक है और सोचने की शक्ति कम। सुँदर व प्रिय स्त्री की इच्छा की पूर्ति के लिए तुम लोग बहुत आतुरता दिखाते रहते हो।ऐसे कामों के लिए ना जाने तुम लोगों में अकस्मात इतनी शक्ति और उत्साह कहाँ से आ जाता है? कहीं ऐसी ही बात तो नहीं है ना?"

भीम क्रोधित हुआ और बोला "आवश्यकता से अधिक बात मत कर" कहकर हनुमान को गदा से मारने आगे बढ़ा।

हनुमान हँसता बोला "अच्छा, गदा-युद्ध के लिए आह्वान् दे रहे हो? तुम्हारे जैसे अनुज हों तो अग्रज को वनवास जाने के

अलावा कोई और मार्ग होगा भी कैसे? देखो, मेरे पास भी एक गदा है, किन्तु मेरे साथ-साथ वह भी बूढ़ी हो गयी । अनुज, ज़रा वह गदा मेरे हाथ में देना । करूँ भी क्या? मुझे तो तुम गदा-युद्ध के लिए बुला रहे हो ।युद्ध तो करना ही पड़ेगा । है ना?"

उस गदा को उठाने के प्रयत्न में भीम असफल हो गया । वह उसे उठाते हुए हाँफने लगा तो हनुमान ने गदा को बड़ी सुगमता से उठाया, मानों उसका कोई भार ही ना हो । भीम के शरीर पर उसे धीरे और इस सुँदर ढ़ंग से रखा, मानों उसे आशीर्वाद दे रहा हो । भीम ने पीड़ा से कराहते हुए अपनी गदा से हनुमान को मारा । हनुमान ने गदा ऊपर उठायी और हुँकारा ।

दोनों ने बहुत समय तक गदा-युद्ध किया । भीम की गदा हाथ से छूट गयी और दूर जा गिरी । हनुमान ने अपनी गदा दूर फेंकी और उससे मल्लयुद्ध के लिए सन्नद्ध हो गया ।

जब दोनों मल्लयुद्ध कर रहे थे तब भीम को एक बात स्पष्ट रूप से ज्ञात हुई । हनुमान चाहे तो एक पल में उसे भूमि पर पटक सकता है, कुछ भी कर सकता है । किन्तु वह ऐसा नहीं कर रहा है । गदा और मल्लयुद्ध की सूक्ष्मताओं को जिस प्रकार गुरू अपने शिष्य को सिखाता है, उसी प्रकार युद्ध करके वह भीम को भी शिक्षित कर रहा है ।
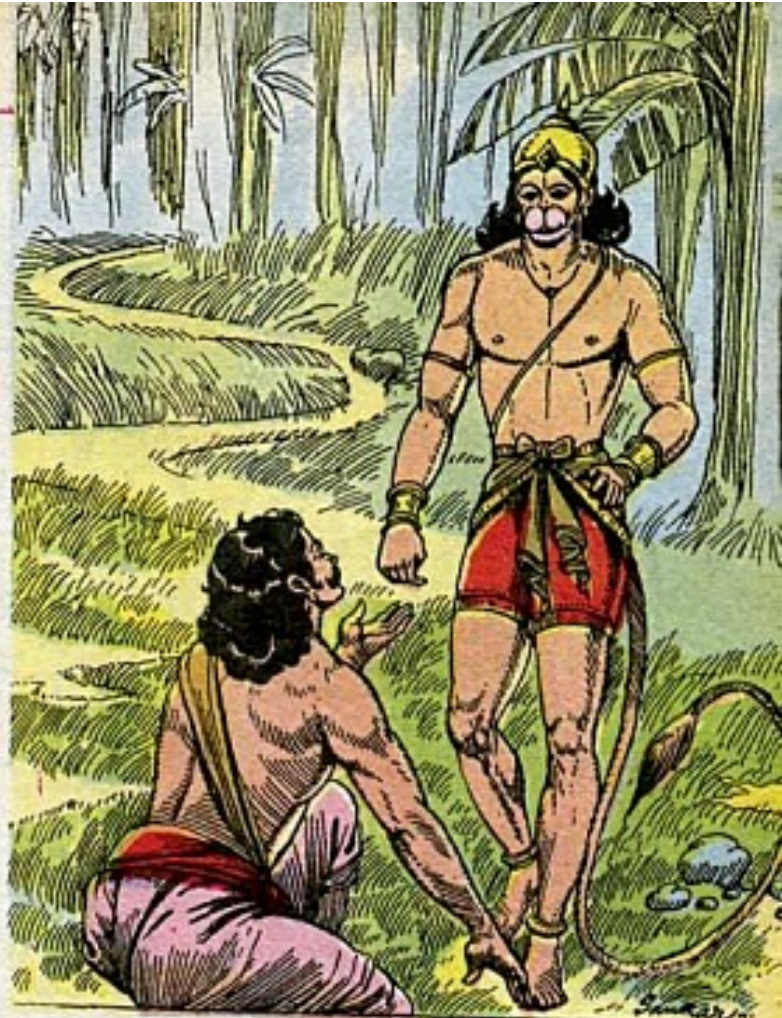
भीम ने यह सत्य जाना और हनुमान के सम्मुख अपने घुटने टेककर बोला "हे महानुभाव, जान गया हूँ । आप हनुमान हैं । मैं वायुदेव का वर-प्रसाद हूँ । कुँती का पुत्र हूँ, धर्मराज का भ्राता भीम हूँ । मुझपर कृपा कीजिये ।"

हनुमान ने बड़े वात्सल्य से भीम को दोनों हाथों से उठाया और कहा "हाँ सहोदर, हम दोनों वायु के पुत्र हैं ।"

भीम ने कहा "आपके विराट् रूप को देखने की लालसा है ।" हनुमान ने कहा "सहोदर, यह द्वापर युग है । मेरे विराट् रूप को तुम देख नहीं पाओगे । फिर भी, तुम्हारी तृप्ति के लिए दिखाता हूँ, देखो ।" कहते हुए उसने अपने शरीर को विस्तृत किया । वह

मेघ मंडलों के उस पार गया । अपनी पूँछ उठायी और आकाश को समेटकर दबोच लिया ।पुनः हनुमान ने भीकर गर्जना की ।

हनुमान पुनः यथावत् हो गया और पूछा "तुमने तो बताया नहीं कि किस काम पर निकले हो?" भीम ने कारण बताया ।

"भीमसेन, दलसरोवर की रक्षा का भार केशिकि नामक एक यक्षिणी पर है । वह बड़ी ही प्रचंड यक्षिणी है । उसके सम्मुख बल-पराक्रम व्यर्थ हैं । कोई ऐसा विरले ही हो, जो उसके माया-जाल में नहीं फँसता । मैं जिस राम नाम का स्मरण करता हूँ, वह राम नाम तुझे समय पर जागरूक करेगा । तक्षण तब तुम अपने को संभाल लो । स्मरण रखना, वह यक्षिणी उत्तम कोटि की शिवदीक्षा परायणा है । अपनी हथेली भर के मेरे रोम ले जाओ । जब-जब वह यक्षिणी तुम्हारे मार्ग में बाधक बनकर खड़ी हो जाएगी,तब-तब मेरा एक-एक रोम उसके सामने फेंकते जाना । जहाँ रोम गिरेगा, वहाँ शिवलिंग का उद्‌भव होगा । यक्षिणी सहस्रनामों से उसकी पूजा करती रहेगी । इस अवधि में तुम अपना काम निकालो और लौटो ।" कहते हुए हनुमान ने अपनी पूँछ के पुच्छ से रोम निकाले और दिये । भीम को दलसरोवर का मार्ग भी दिखाया ।

दूर से आते हुए भीम को केशिकि ने देखा । तक्षण ही उसने अपूर्व सुँदरी का रूप धारण कर लिया । इस रूप में कोई भी अनायास ही उसके वशीभूत हो जायेगा; उसका दास बन जायेगा । वह नाचने गाने लगी । भीम निकट पहुँचा और उसके मनमोहक रूप पर लट्टू हो गया । तब राम नाम का स्वर उसके कानों में गूँजने लगा । भीम ने अपने को संभाल लिया और आगे बढ़ा ।विविध प्रकार से यक्षिणी ने भीम को अपने प्रेम-पाश में बाँधना चाहा, परंतु वह सफल नहीं हो पायी । वह इन प्रयत्नों से थक गयी, चिढ़ गयी और उसने भयंकर रूप धारण करके उसका रास्ता रोका ।

जैसे ही भीम ने हनुमान के रोम को उसके सामने फेंका, तक्षण ही वहाँ शिवलिंग का साक्षात्कार हुआ । केशिनि शिवलिंग को

देखकर रुक गयी और अपनी ग़लती पर पछताती हुई भक्तिपूवकि शिव की स्तुनि करने लग गयी । उसके शिवलिंग क़ी पूजा के समाप्त होते-होते भीम सरोवर में उतरा । 'सौंगधिका' कमल को जड़ से तोड़ा और लेकर भागने लगा । पूजा समाप्त करके केशिनि प्रचंड वेग से भीम का पीछा करने लगी । उसके केश अग्निशिखाओं की तरह वायु में व्याप्त होने लगे और भीम को घेरने लग गये ।

भीम ने हनुमान के कहे अनुसार जहाँ-जहाँ आवश्यकता हुई, रोम फेंके और यों यक्षिणी को भक्ति के आवेश में बेसुध रखा । अपनी रक्षा करता रहा और अंततः कदलीवन पहँचा, जहाँ हनुमान है ।

हनुमान को पुष्प दिखाते हुए भीम ने कहा ''महोदय, आपके अनुग्रह से मैंने विजय पायी है । मैं आपसे अपनी तरफ़ से और अपने भाइयों की तरफ़ से प्रार्थना करता हूँ कि भविष्य में कौरवों और पाँडवों के बीच में जो युद्ध होगा, उसमें आप हमारी सहायता करें ।''

हनुमान ने भीम से कहा ''भीम, मैं उस काल में युद्ध नहीं करूँगा । तुम्हारा आग्रह है कि मैं युद्ध में तुम भाइयों की सहायता करूँ, इसलिए एक कार्य करूँगा । संग्राम के समय तुम्हारे भाई अर्जुन के रथ के पताके पर रहूँगा और उसकी रक्षा करता रहूँगा । अवश्य ही तुम भाइयों की ही विजय होगी । अब तुम निश्चिंत जाओ और यह फूल अपनी धर्मपत्नी को देकर उसकी मनोच्छा की पूर्ति करो । कहो कि वह 'सौगंधिका' कमल से शिव की पूजा करे । शिव की पूजा करने से तुम लोगों का शुभ होगा, सुख-संपत्ति मिलेगी ।यह भी स्मरण रहे कि यह पुष्प कभी भी मुरझाता नहीं ।'' प्रेम से हनुमान ने भीम को आशीर्वाद दिया; बिदा किया ।

भीम ने द्रौपदी को पुष्प दिया और उससे शिव की पूजा करायी । हनुमान ने जो-जो कहा,बिना भूले सब कुछ उसे बताया ।

द्रौपदी ने सब कुछ सुना और मुस्कुराती बोली ''मैंने 'सौगंधिका' पुष्प चाहा है, इसीलिए तो उस महानुभाव की रक्षा का अभय

हमें उपलब्ध हुआ है। इससे हमारा लाभ ही हुआ है।"

हनुमान की कृपा पर पाँडव बहुआनंदित हुए।

प्रतिज्ञा के अनुसार पाँडवों ने बारह वर्षों का वनवास समाप्त किया और एक वर्ष का अज्ञातवास भी निर्विघ्न पूर्ण किया। उन्होंने राज्य- भाग माँगते हुए अपनी तरफ़ से समझौते के लिए कौरवों के पास कृष्ण को राजदूत बनाकर भेजा।

कृष्ण के हितबचन दुर्योधन को सही नहीं लगे। उसने कृष्ण की और उसके संदेशों की परवाह नहीं की। उसके बाद पाँडवों और कौरवों के बीच समझौता ही हो नहीं पाया। दोनों के बीच युद्ध अनिवार्य हो गया। कुरुक्षेत्र में रणभेरी प्रतिध्वनित हुई। अर्जुन के रथ के फड़फड़ाते पताके पर हनुमान सूक्ष्म रूप में प्रत्यक्ष हुआ। कृष्ण अर्जुन के रथ का सारथी था। युद्धक्षेत्र में उभय सेनाओं के मध्य विजयध्वज उज्वल रूप से फहराता रहा।

कुरुक्षेत्र में महाभारत संग्राम हुआ। कृष्ण रथसारथी बनकर अर्जुन का मार्गदर्शन करते रहे। उसे स्फूर्ति दी, प्रेरणा दी और अद्भुत युद्ध करवाया। अर्जुन ने शत्रुओं का संहार किया और विजयी हुआ।

दु:शासन द्रौपदी के केश पकड़कर भरी सभा में उसे खींचकर ले आया। अपनी पत्नी तथा अपने परिवार के अपमान से अति क्रोधित भीम ने सब के सम्मुख उस समय प्रतिज्ञा की थी कि दु:शासन के रक्त से द्रौपदी
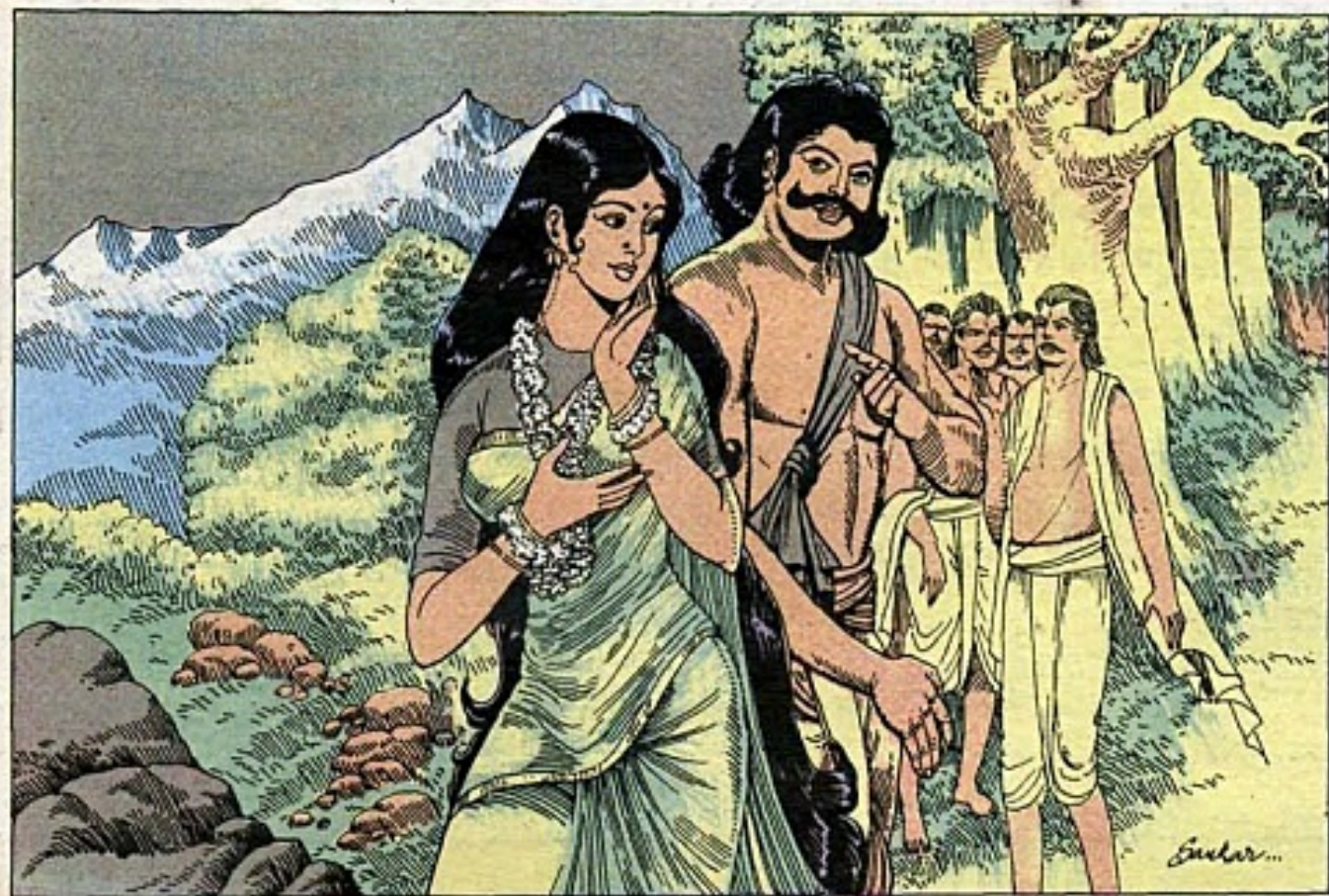
के केश भिगे ने के बाद ही मैं उसका जूडा बाँधूँगा । अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार ही भीम ने दुःशासन की छाती को चीरा और उसके रक्त से द्रौपदी का जूडा बाँधा । द्रौपदी ने हनुमान के कहे अनुसार अब 'सौगंधिका' पुष्प को अपने जूडे में लगाया; भक्ति और श्रद्धा से हनुमान को प्रणाम किया ।

गदा युद्ध में भीम ने दुर्योधन की जाँघें तोड़ डालीं । इससे भीम की सब प्रतिज्ञाएँ पूर्ण हो गयीं । अधर्म के रास्ते पर चलकर कौरवों ने अपने आपको हानि पहुँचायी । उनका सर्वनिाश हो गया । धर्म के मार्ग पर चलकर पाँडवों ने विजय पायी ।

श्रीकृष्ण ने हनुमान की प्रशंसा करते हुए कहा "हे हनुमान, तुममें सत्कार्य के प्रति अपार श्रद्धा है, गौरव है, इसीलिए तुमने उस दिन रावण के संहार में राम की सहायता पहुँचाकर अपना धर्म निभाया । अपनी अकुंठित दीक्षा से तुम अपनी लक्ष्य-प्राप्ति में कृतकृत्य हुए । अब कुरुक्षेत्र के महासंग्राम में विजय ध्वज के रूप में फहराकर पाँडवों की विजय के कारक बने ।"

तब हनुमान ने विनयपूर्वक कहा "अर्जुन के जब आप सारथी हों तो जय कहाँ भागेगी? कहाँ भाग सकती है? त्रिलोकों में क्रियासिद्धि से बढ़कर कोई बल नहीं । मैं तो केवल एक चिन्ह मात्र हूँ ।"

"हाँ, तुम क्रियासिद्धि के चिन्ह बनकर रहोगे । समस्त कालों में, समस्त युद्धों में तुम्हारे चिन्ह का जिसका झंडा होगा, वही विजय पायेगा । विजय ध्वज के रूप में सदैव उसका आदर होगा और असीम कीर्ति प्राप्त करेगा ।"

यों कृष्ण ने शाश्वत सत्य बता दिया ।

पाँडवों ने हनुमान को सविनय प्रणाम किया । हनुमान ने हृदयपूर्वक उन्हें आशीर्वाद दिया । कृष्ण का आशीर्वाद पाकर हनुमान गंधमादन पर्वत पर उड़ चला । वहाँ के प्रशांत वातावरण में राम नाम के स्मरण में अपना जीवन सार्थक करने लगा ।

नया दामाद

विवाह के बाद तीन महीनों के अंदर नया दामाद कश्यप ससुराल बारंबार आता-जाता रहा। सास गौरी के लिए उसका यह आना-जाना सरदर्द बनकर रह गया।

दशहरे पर जब दामाद आया तब उसने पकवानें खूब खायीं और उनकी जी भरकर प्रशंसा भी की। उस समय उसकी प्रशंसा सुनकर गौरी खुशी से फूले ना समायी। वह खाता जाता और अपने सास की प्रशंसा के पुल बाँधते जाता।

"तुम्हारे दामाद तो रसगुल्लों पर मरते हैं माँ। उनकी नानी मरते तक रसगुल्ले बनाती ही रही और अपने पोते को खिलाती रही। जब तक वह जीवित रही, हर दिन सोने के पहले भी वे रसगुल्ले अवश्य ही खाते। खाये बिना तुम्हारे दामाद सोते ही नहीं थे।" बेटी कोमला ने कहा।

"पर क्या करूँ बेटी। मैं तो सब पकवान बनाती हूँ, परंतु रसगुल्ला बनाना मुझे नहीं आता। उनके लिए तो सुभद्रा पर निर्भर होना पड़ेगा।" अपनी असमर्थता पर गौरी दुख प्रकट करती हुई बोली।

बिटिया और दामाद जिस दिन निकल रहे थे, उस दिन सुभद्रा से रसगुल्ले बनवाये और उन्हें देकर बिदा किया।

तीन दिनों के अंदर ही पूरे रसगुल्ले खाली कर दिये कश्यप ने। चौथे दिन ससुराल जाने गाड़ी ले आये हुए अपने पति से कोमला ने कहा "तीन दिनों के पहले ही तो दशहरे पर हम हो आये हैं। इतनी जल्दी हमारा जाना उचित नहीं होगा।" अपने पति की इस ज़ल्दबाज़ी पर आश्चर्य प्रकट करती हुई उसने कहा।

"बकवास बंद कर। आज अश्वयुज पूर्णिमा का दिन है। सुभद्रा से रसगुल्ले बनवाकर खाने पर ही आत्मा को शांति मिलेगी" कश्यप बहुत ही उतावला दिख रहा था।

प्रथम पूर्णिमा, एकादशी, शिवरात्रि आदि का कोई न कोई बहाना बनाकर विवाह होने के तीन

कृष्णा कुलकर्णी

बोली।

"रंगा राम-सीता का कल्याण-उत्सव देखने के लिए बहुत ही आतुर था। मैंने उसे जाने की अनुमति अभी-अभी दी थी।" कोमला के पिता ने कहा।

"आप भी कमाल के आदमी हैं। ठीक समय पर आपने रंगा को भेज दिया। आप तो जानते ही हैं कि आपका दामाद रसगुल्लों के पीछे कितना पागल है। अगर रसगुल्ले नहीं दिये तो वह जाने का नाम भी नहीं लेगा। मेरी समझ में नहीं आता कि मैं इस बला को कैसे टालूँ? ना कहकर अपनी बेटी के दिल को भी दुखा नहीं सकती। देखते-देखते उसके परिवार को बरबाद नहीं कर सकती। किसी को भेजिये और रंगा को तुरंत बुलवा लीजिये" गौरी ने कहा।

गौरी के पति ने एक आदमी को रंगा के पास भेजा। उसने रंगा से कहा "सुभद्रा से रसगुल्ले बनवाने हैं, इसलिए मालिक ने तुम्हें तुरंत आने को कहा है"।

यह सुनते ही रंगा घबड़ा गया। अपनी पत्नी से वादा कर चुका था कि किसी भी हालत में हम उत्सव देखने जाएँगे। रसगुल्लों की ख़बर कान में पड़ते ही उसकी पत्नी रूठ गयी। फूल फेंक दिये और अभी-अभी पहनी हुई नयी साड़ी उतार दी। पुरानी साड़ी पहनकर दरवाज़े के पास ही चटाई बिछाकर लेट गयी।

पर रंगा करे क्या? अपने मालिक की बात टाले कैसे? वह घर से निकल पड़ा और मालिक के घर आया। गौरी ने आवश्यक सामग्री उसके सुपुर्द की और कहा "सावधान रहना। वहीं बैठो, जब

महीनों के अंदर कश्यप ससुराल आया और सुभद्रा के हाथों बने रसगुल्ले खूब खाया। अपने यहाँ भी खाने के लिए काफ़ी मात्रा में ले भी गया।

इस बार कश्यप शनि त्रयोदशि के बहाने अपने ससुराल पहुँचा।

"क्या इससे हमारा पिंड नहीं छूटेगा। जन्म भर अपने दामाद की पीड़ा से मुझे क्या पीड़ित होना ही पड़ेगा?" अपने ही आप बड़बड़ाती रही गौरी।

दुकान बंद करके कोमला का पिता दुपहर को खाने आया और पत्नी से पूछा "बेटी और दामाद आज शाम को निकलनेवाले हैं ना?"

"रसगुल्ले बनवाने पर ही दामाद घर के बाहर क़दम रखेगा। नौकरानी को आवश्यक सामग्री देकर सुभद्रा के पास भेजना है। तभी शाम तक वह तैयार करके भेज पायेगी" गौरी नाराज़ होती हुई

तक सुभद्रा रसगुल्ले ना बनाये। उसपर कड़ी निगरानी रखना। उसका विश्वास करके इधर-उधर मत जाना।'' कहती हुई उसने उसे सावधान किया।

रंगा सुभद्रा के घर गया तो देखा कि वहाँ बंधुओं की भीड़ लगी हुई थी।

सुभद्रा ने रंगा से कहा ''तुम्हारी मालकिन को हर हफ़्ते रसगुल्ले बनाकर देती हूँ। पर क्या फ़ायदा? एक फूटी कौड़ी भी नहीं देती। मुझसे मुफ़्त में मेहनत कराती है। गाँव से मेरी दीदी की संतान आयी हुई है। आज मुझसे यह काम नहीं हो पायेगा''।

यह सुनकर रंगा बहुत ही निराश हो गया। सोचा, उत्सव में जाने का समय भी बीत गया। कल के लिए यह काम स्थगित किया तो जाना ही असंभव हो जायेगा। कल ही सही, पत्नी को इस उत्सव में नहीं ले जाऊँगा तो पत्नी अवश्य ही रूठकर मायके चली जायेगी।

वह गहरी सोच में पड़ गया कि इन रसगुल्लों के मसले से कैसे निबटूँ, तब अकस्मात उसके मस्तिष्क में एक उपाय सूझा। उसने सुभद्रा को अपने उपाय की झलक दी और कहा ''इतने दिनों तक तुम रसगुल्ले बनाती रहीं परंतु कोई फ़ायदा नहीं। इस उपाय से तुम्हें मेहनत का भी फल मिलेगा। कुछ धन भी प्राप्त होगा। फिर रसगुल्ले बनाने की बेगारी से तुम बच भी जाओगी।''

सुभद्रा ने खुशी से कहा ''हाँ, ऐसा ही करेंगे''।

रंगा ने जब बता दिया कि रसगुल्ले आज तैय्यार नहीं हो सकते तो कश्यप ने अपनी यात्रा कल के लिए मुल्तवी की।

पिछवाड़े में कुएँ के पास आम का जो पेड़ था, वहाँ बैठा हुआ था कश्यप। रंगा ने उससे कहा ''छोटे मालिक, सुभद्रा ने हमारे लिए रसगुल्ले बनाने से अस्वीकार कर दिया। किन्तु अपनी दीदी के बच्चों के लिए उसने रसगुल्ले बनाये। उनको खाता हुआ देखकर मेरे मुँह में पानी आ गया। उनका रंग देखकर ही मैं ताड़ गया कि रसगुल्ले बनाने में आज उसने अपनी कला दिखायी। देखने में ही जब कि वे इतने अद्भुत लग रहे हों, तो खाने में, वाह, क्या कहना? यह आपका दुर्भाग्य है कि ऐसे रसगुल्ले वह आपके लिए तैयार नहीं करती।''

उसकी बातें सुनते ही कश्यप अपनी ऊँगलियों को चाटता रहा और बोला ''तुमने जो कहा ठीक है। लेकिन उसके घर में जो रसगुल्ले बने, हमें कैसे मिल पायेंगे?

"रसगुल्ला ही तो है। इसके लिए आप क्यों इतना सकुचा रहे हैं? सुना है कि रसगुल्ले बनाने के लिए आपकी सास उसे पैसे नहीं देती। यह तो सुभद्रा के प्रति सरासर अन्याय है। कल जो रसगुल्ले बनायेगी, उसके लिए कम से कम पच्चीस रुपये दें तो उचित होगा। आप उस रक़म को देने के बहाने वहाँ आ जाइये। बाक़ी मैं संभाल लूंगा" रंगा ने धीरज देते हुए कहा।

कश्यप निकल तो पड़ा, लेकिन उसमें उत्साह नहीं था। उनके सुभद्रा के घर पहुँचते-पहुँचते अंधेरा हो गया। सुभद्रा अकेली घर में थी।

"आप और मेरे घर? मैने तो कह दिया कि कल दे दूँगी।" कश्यप को देखते ही सुभद्रा ने कहा।

"मालूम हुआ है कि इतने दिनों से रसगुल्ले बना रही हो, और उनके पैसे नहीं दिये गये। ये पच्चीस रुपये तुम्हें देने खुद आया हूँ।" कहते हुए उसने सुभद्रा को रक़म दी।

इतने में रंगा ने कहा "सुभद्रा, तेरा पति तो मालूम नहीं, कहाँ चला गया? मेरे साले ने चार दिन पहले ही उसे शहर में देखा है। कहता था कि वह बहुत मोटा हो गया है और चेहरे में काफ़ी रौनक़ आ गयी है।"

सुभद्रा ने अपनी सूरत ऐसी बना ली मानों दामाद के समने उसके भागे हुए पति के बारे में बोलना उसे अच्छा नहीं लगा हो। वह रंगा को गली के दरवाज़े के पास ले गयी, मानों अकेले में कुछ कहना चाहती हो।

जाने के पहले रंगा ने दामाद को आँखों से

किसी भी हालत में मुझे वे रसगुल्ले चाहिये। तुम तो जानते ही हो कि मैं रसगुल्लों पर कितना मरता हूँ। इन रसगुल्लों को खाने के बाद मैं अपनी सास से भी जिद करूँगा कि मुझे भी ऐसे ही मिठास से भरे रसगुल्ले चाहिये। अगर ऐसे रसगुल्ले नहीं मिले तो मैं अपनी पत्नी को यहीं छोड़ जाऊँगा।"

"हम उनके घर जाएँगे। बच्चे खाये जा रहे हैं, इसलिए सुभद्रा ने उन रसगुल्लों को एक हाँड़ी में डाल दिया और छिपा दिया। यह मैने अपनी आँखों देखा है। अंधेरे में वह हाँड़ी ले आयेगी तो हमारा काम चल जायेगा" रंगा ने उपाय बताया।

"यह कैसे संभव होगा? मै नया दामाद भी हूँ। किसी ऐरे-ग़ैरे के घर जाना अनुचित होगा।" कश्यप सकुचाते हुए बोला।

इशारा किया।

एक पल की भी देरी किये बिना कश्यप रसोई-घर में घुस गया। कश्यप ने हाँड़ी में जो भी था, निकाला और एक गठरी में बांध दिया। फिर भी उसने सोचा कि शायद कुछ बच गया हो, उसने उसमें हाथ डाला। रसगुल्लों का छोटा-सा टुकड़ा भी वह छोड़ना नहीं चाहता था। इसलिए जो हाथ में आया, जल्दी-जल्दी खाने लग गया।

बस, कश्यप का मुँह एकदम जल उठा। लाल चींटियाँ उसके चेरे और उसके हाथों को काटने लगीं। जैसे उसने सोचा उस हाँड़ी में रसगुल्ले नहीं थे, बल्कि पशुओं के लिए गोली के आकार में बना कोई चारा था।

उसका सारा चेहरा चींटियोंकेकाटने केकारण सूज गयाऔरलाल-लाल भी होगया। कश्यप धीरेसेकराहते हुएसब कीआँखोंसेछिपकर पिछवाड़ेकी दीवार फाँदकर बीच सड़क पर आया।

रंगा वहीं खड़ा था, मानों वह उसी की प्रतीक्षा कर रहा हो। कश्यप के पास आकर बोला "क्या हुआ छोटे मालिक। सुभद्रा से बिना कोई बात कहे, दीवार को फाँदकर चले आना क्या ठीक है? क्या यह आपकी मर्यादा के विरुद्ध नहीं?" नाराज़ी का नाटक करते हुए उसने कहा।

कश्यप बोला धीरे-धीरे "चिल्लाओ मत रंगा। घर पहुँचने पर सब कुछ बताऊँगा। परंतु यह राज़, राज़ ही रहने दे। ले, पहले ये दस रुपये ले।" उसने रंगा को पैसे दिये।

घर पहुँचने के आधे घंटे के बाद कश्यप गौरी से बोला "सासजी, आजकल मीठा मुझे अच्छा नहीं लगता। सबेरे जो मिठाइयाँ आपने खिलायीं, उससे मेरा चेहरा भी सूज गया है। मैने क़सम खायी है कि आगे कभी भी मीठा नहीं खाऊँगा। मैं सबेरे ही चला जाऊँगा। आपकी बेटी को भी लेकर अपने गाँव चला जाऊँगा"।

दामाद की बातों से रंगा और गौरी दोनों बहुत ही खुश हुए। लेकिन बेचारी गौरी को क्या मालूम था कि परदे के पीछे रंगा से खेले हुए नाटक का यह परिणाम है।

महाभाग्य

एक गाँव में श्रीपति नामक एक चरवाहा रहता था। वह युवक था, धैर्यवान था, इसलिए वह सदा देशों में भ्रमण करने और युद्धों में भाग लेने के बारे में सोचा करता था।

एक दिन श्रीपति इन्हीं के बारे में सोचता हुआ एक पेड़ के नीचे लेट गया। थोड़ी देर में वह गहरी नींद में चला गया। उसने उस नींद में एक विचित्र सपना देखा।

उसने देखा कि वह पहाड़ पर चढ़ रहा है और चढ़ने के बाद एक सिंहासन पर आसीन हो गया है। वह सिंहासन पर जब आसीन हुआ, तब उसने देखा कि उसके बग़ल में एक सुँदर रानी भी बैठी हुई है। अपने को सिंहासन पर पाकर और रानी को देखकर चकित होते हुए अपना हाथ सिर पर रखा। वहाँ उसका हाथ रत्न-खचित मुकुट को छू गया।

''मैं राजा हूँ, राजा'' चिल्लाता हुआ नींद से जाग उठा और अपने चारों ओर देखा। श्रीपति को मालूम हो गया कि यह केवल सपना है। उसने देखा कि सामने चरते हुए पशु हैं और वह पेड़ के नीचे। सोचा, कितना अच्छा सपना देखा। फिर वह सोच में लीन हो गया।

दूसरे दिन भी उसने ऐसा ही सपना देखा। इससे श्रीपति को लगा कि शायद यह सपना साकार हो। उसने सोचा ''कल भी ऐसा ही सपना देखूँगा तो सामने के पहाड़ पर चढ़ जाऊँगा। हो सकता है, पहाड़ के उस पार के बालाभिपुर राज्य का राजा बन जाऊँ''।

तीसरे दिन भी उसने ऐसा ही सपना देखा। उसने निश्चय किया कि चरवाहे का काम छोड़ दूँगा। वह तक्षण पहाड़ की तरफ़ बढ़ा। बड़ी मेहनत लगाकर वह शाम तक पहाड़ पर चढ़ गया। वहाँ उसे सिंहासन दिखायी नहीं पड़ा; रानी भी नहीं थी। फिर भी श्रीपति निराश नहीं हुआ। अंधेरा होते-होते वह बालाभिपुर राज्य में पहुँचा।

श्रीपति को बहुत भूख लग रही थी। देखा कि आसपास क्या कोई गाँव है या कहीं लोग दिखायी

(पचीस साल पहले चन्दामामा में प्रकाशित कहानी)

दे रहे हैं। घने जंगल के अलावा उसे कुछ भी दिखायी नहीं पड़ा। उसने सोचा कि आज रात को यहीं किसी पेड़ के नीचे सो जाऊँगा और सुबह होते ही किसी गाँव में जाऊँगा।

श्रीपति पाँव समेटे एक पेड़ के नीचे सो गया। भूख की वजह से उसे नींद नहीं आ रही थी। तब उसने सुना कि चार-पाँच घुड़सवार आपस में बातें कर रहे हैं।

श्रीपति ने ध्यान से उनकी बातें सुनी। उनकी बातों से उसे मालूम हुआ कि यहाँ से थोड़ी दूरी पर पेड़ों के पीछे एक उजड़ा हुआ घर है। वे घुड़सवार उस रात को वहीं ठहरना चाहते हैं। श्रीपति चुपचाप उनके पीछे-पीछे गया। थोड़ी देर में वे सब उजड़े घर के पास पहुँचे। घुड़सवार घोड़ों से उतरे और अंदर जाकर चादर बिछाकर लेट गये। श्रीपति सोच में पड़ गया कि अब क्या करूँ? वह अंधेरे में उस घर की दीवार से सटकर खड़ा हो गया। श्रीपति को लगा कि ये शायद चोर होंगे। थोड़ी देर में उसे मालूम हो गया कि उसका संदेह सच है। उनमें से एक आदमी ने गंभीर स्वर में दूसरे से पूछा ''अरे चील, तुमने आज कितना कमाया है?''

चील नामक उस आदमी ने विनय से कहा ''साहब, मैंने आज ऐसी चीज़ पायी है, जो सपने में भी पायी नहीं जा सकती। वह कोई बड़ा धनवान लगता है। मैंने उसके कुर्ते की चोरी की है। जब-जब हम धन चाहते हैं, तब तब उस कुर्ते की जेब को हिलाने से उसमें से अशर्फियाँ गिरती हैं''।

उनके नायक ने उसकी भरपूर प्रशंसा की और एक और से पूछा ''सियार, बोलो, आज की तुम्हारी कमाई क्या है?''

सियार के नाम के उस आदमी ने कहा ''मालिक, आज मैं बहुत ही भाग्यवान हूँ। प्राण-संकट में पड़े

एक सेनाधिपति को मैने देखा। उसके मुकुट की मैने चोरी की है। उसे सिर पर पहनने पर, जब-जब हम चाहें तब-तब उस मुकुट की चारों दिशाओं से बाणों की वर्षा होती है''।

''वाह, वाह! तुम सचमुच ही सियार हो। अरे ओ रीछ, तू बोल, तेरी क्या कमाई है?'' नायक ने पूछा।

''मालिक, मैने एक तलवार पायी है। जब हम चाहें तब उसे भूमि में भोकेंगे तो हर बार हज़ार सैनिक पैदा हो जाते हैं''। रीछ ने कहा।

''बहुत अच्छा। वे सब दीवार में लटका देना और सो जाना। सबेरे बहुत काम पड़े हैं करने के लिए'' चोरों के नायक ने कहा।

श्रीपति ने उनका संभाषण सुना। चोर जैसे ही सो गये, दीवार पर लटके हुए कुर्ते, तलवार और मुकुट को धीरे से निकाला और चुपके से वहाँ से भाग गया।

दो दिनों में बालाभिपुर राज्य में पहुँच गया। राजा के दर्शन की विनती की।

क़िले के रखवालों ने पूछा ''तुम कौन हो? क्या राजा का दर्शन पाना इतना सुलभ समझ रखा है क्या?''

''अच्छा, लगता है, तुम लोगों ने मेरा नाम नहीं सुना है। महावीर श्रीपति को नहीं जानते हो'' श्रीपति ने आत्मविश्वास के साथ पूछा।

''आप महावीर श्रीपति हैं। पधारिये'' कहता हुआ एक सैनिक उसे राजा के पास ले गया।

उस समय सिंहासन के बग़ल में ही राजकुमारी भी बैठी हुई थी। उसको देखते ही श्रीपति को लगा कि उसका सपना सच होनेवाला है। केवल उसके सिर पर मुकुट नहीं था, नही तो सपने में जिस रानी को देखा, बिल्कुल वैसी ही थी।

राजा ने श्रीपति को देखकर पूछा ''बोलो, तुम्हें क्या चाहिये?''

श्रीपति ने उसके पास जो अद्‌भुत मुकुट तथा अनोखी तलवार है, केवल उन्हीं के बारे में बताया। उसने बताया कि मैने अनेकों युद्धों में युद्ध किया है और कमाल का योद्धा हूँ। और उसने बताया कि मैं चाहूँ तो इस संसार को जीत सकता हूँ और आपको उसका राजा बना सकता हूँ।

राजा उसकी बातों पर बहुत प्रसन्न हुआ।

''ठीक है, संसार को बाद जीतो, पहले मेरे राज्य पर आक्रमण करनेवाले गांधार राजा को जीत कर दिखा।'' राजा ने कहा।

''यह तो मेरे बायें हाथ का खेल है। परंतु मेरी

एक इच्छा है। मैं गांधार राजा पर विजय पाऊँ तो क्या आप राजकुमारी का विवाह मुझसे रचायेंगे?'' श्रीपति ने निर्भीक होकर राजा से पूछा।

राजा ने मुस्कुराते हुए अपनी स्वीकृति दी।

राजा को लगा कि गांधार राजा की वजह से अपने राज्य पर बड़ी विपत्ति आनेवाली है। यह बला टल गयी तो इस युवक से बेटी की शादी कराने में क्या हर्ज़ है? उसको लगा कि यह पराक्रमी है और ऐसे पराक्रमी से पुत्री की शादी करना गौरवप्रद् ही होगा।

श्रीपति ने कुछ सैनिकों को लेकर गांधार राजा का मुक़ाबला किया। घमासान लड़ाई हुई। दोनों तरफ़ बहुत से सैनिक मौत के घाट उतरे।

श्रीपति को जब-जब सैनिकों की ज़रूरत महसूस हुई तब-तब उसने तलवार भूमि में भोंकी और हज़ारों सैनकिों को पैदा किया। अलावा इसके, उसके मुकुट से चारों दिशाओं से निकलनेवाले बाणों ने शत्रु सेना के छक्के छुड़ा दिये।

शाम तक बचे-खुचे सैनिकों के साथ गांधार राजा भाग गया। श्रीपति सैनिकों की जय-जय ध्वनि के बीच बालाभिपुर राज्य में पहुँचा। वह सीधे राजा के पास गया।

राजा ने श्रीपति का अभिनंदन किया। उसने कहा, ''श्रीपति, तुमसे अधिक वीर दामाद मुझे नहीं मिलेगा। मै तो वृद्ध हो गया हूँ। तुम्हें अभी इस राज्य का राजा घोषित करता हूँ और तुम्हारा राज्याभिषेक करता हूँ।''

राजकुमारी के साथ श्रीपति का विवाह बड़े वैभव से संपन्न हुआ। वह सिंहासन पर राजा बनकर आसीन हुआ। जब सिंहासन पर बैठा तब

बग़ल में रानी मुकुट पहने बैठी थी।

श्रीपति मन ही मन प्रसन्न हुआ। उसने सोचा सपने में जो रानी मैने देखी थी, यही वह रानी है।

राजकुमारी भी ऐसे पराक्रमी को अपने पति के रूप में पाकर बहुत ही संतुष्ट हुई।

श्रीपति के राज्य-काल में प्रजा बहुत ही सुखी थी। ऐसे उदार और दयालू राजा को पाकर प्रजा अपने को धन्य मानने लगी। रानी और राजा को उसने सच-सच बताया कि वह असल में क्या था। फिर भी उन्हें इस बात का रंज नहीं हुआ कि एक चरवाहे को हमने सिंहासन पर बिठाया है। रानी ने तो कह दिया कि मनुष्य गुण से जाना जाता है, हैसियत से नहीं।

श्रीपति तो यह भूल ही गया कि उसके पास एक कुर्ता भी है, जिसकी जेब को हिलाने से धन की

वर्षा होती है। रानी और राजा भी उसके बारे में बिल्कुल ही जानते नहीं थे।

कुछ सालों के बाद देश में अकाल पड़ा। खज़ाने में जितना धन था, वह दूसरे राज्यों से अनाज आदि ख़रीदने के लिए खर्च कर दिया गया। भूख के मारे लोग मर रहे थे। त्राहि-त्राहि मच गयी। राज्य-भर में असंतोष फैल गया। राजा, रानी और श्रीपति अपनी नित्सहायता पर दुखी होने लगे।

राजभवन में जितनी भी चीज़ें थीं, रानी ने बेच दीं और उनसे मिले धन से अनाज मंगवाया और जनता में बाँटा। जब वह ढूँढ़ रही थी कि बेचने के लिए क्या और कोई चीज़ बाक़ी है तो उसने पेटी के बिल्कुल अंदर एक पुराना कुर्ता पाया। उसको ताज्जुब हो रहा था कि इतना पुराना कुर्ता पेटी में कैसे आया और उसे फेंकने ही वाली थी कि श्रीपति ने उसे रोका। उसे अब याद आया कि धन बरसानेवाला एक कुर्ता मेरे पास है। उसने रानी को कुर्ते की महिमा बतायी। फ़िर उन्होने विलंब ही नहीं किया। कुर्ते की जेबों को वे हिलाते रहे और उनमें से अशर्फियाँ गिरती रहीं। काफ़ी धन इकट्ठा हो गया। उन्होने अपने इस धन से दूसरे राज्यों से अनाज खरीदा और आवश्यक चीज़ें मंगवायीं। जनता चकित रह गयी कि महाराज को इतना धन आया कहाँ से?

श्रीपति को लगा कि जनता के दुखों को भगवान की कृपा से मै दूर कर पाया हूँ। जो वस्तुएँ मुझे मिलीं, उनका मैं सदुपयोग कर पाया हूँ। एक मनुष्य के लिए इससे बड़ा महाभाग्य और क्याहो सकता है?

राजा और रानी ने श्रीपति से पूछा "इसके बारे में तो आपने कुछ नहीं बताया। आपने तो केवल सैनिकों को पैदा करनेवाली तलवार तथा बाणों को बरसानेवाले मुकुट के बारे में ही बताया है।"

तब श्रीपति ने कहा "इसकी आवश्यकता नहीं पड़ी और मैं भूल भी गया था कि ऐसा महिमावान कुर्ता मेरे पास है। अच्छा हुआ, अब वह हमारे काम आया है और इससे हमारी प्रजा के दुख दूर हो गये हैं। समय पर जो वस्तु काम आये, उसका मूल्य तो आँका ही नहीं जा सकता। सचमुच यह कुर्ता भगवान की देन है।"

ऐसे पति और दामाद को पाकर किसे नाज़ नहीं होगा।
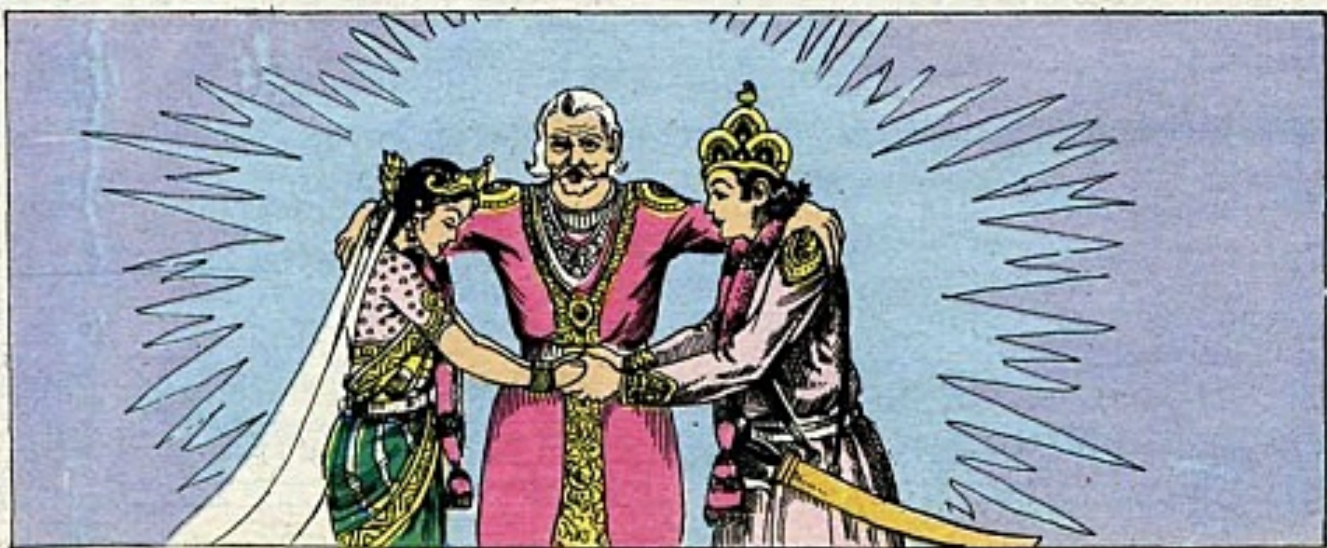
प्रकृति : रूप अनेक

प्राचीन पक्षी

अनुमान है कि संसार में ९,६०० प्रकार के पक्षी हैं। परंतु उनमें से ६००० प्रकार की पक्षियों की संख्या दिन-ब-दिन घटती जा रही है। यह बड़े दुख की बात है कि एक हज़ार प्रकार के पक्षियों के समूल नाश हो जाने की संभावना है। इसका क्या कारण हो सकता है?

हमारे घर के इर्द-गिर्द पेड़ हों, तभी तो पक्षी उनपर आकर बस सकते हैं। अगर पैड़ ना हों तो भला वे रहेंगे कहाँ? मनुष्य अपनी आवश्यकताओं के लिए पेड़ों का नाश कर रहा है। फलस्वरूप पक्षियों की संख्या भी कम होती जा रही है। यूरोप का श्वेत बगुला तथा अमेरीका के पीले रंग की नाक का कोयल आज नहीं रह गये हैं। उन्हें अब प्राचीन पक्षी ही कहना पड़ेगा। वे आज के नहीं, कभी के पक्षी रह गये।

सेने में कुशल

सर्दी लगे तो हम चादर ओढ़ लेते हैं। लकड़ियाँ आदि जलाकर अपने को गरम करते है; नहीं तो धूप में खड़े हो जाते हैं; बिजली के 'हीटर' का उपयोग करते हैं। तब खुली जगह पर रहनेवाले पक्षी कैसे सर्दी का सामना कर पाते हैं? मुख्यतया अंडों को सेने के लिए वे गर्मी कहाँ से जुटा पाते हैं? प्राकृतिक रूप से ही उनमें यह शक्ति निहित है। उदाहरणस्वरूप सेने में कुशल आस्ट्रेलिया के पक्षी 'मल्ली फौल' को ही लीजिये। मादा पक्षी अंडे दे, इसके पहले ही मर्द पक्षी एक मीटर गहरा और तीन मीटर की चौड़ाई का एक गड्ढा खोदता है। उसे पत्तों से भर देता है। पत्ते जब पकने लगत्ते हैं तब गर्मी उत्पन्न होती है। तब मर्द पक्षी अपनी नाक से एक छेद बनाता है। मादा पक्षी सप्ताह में एक एक अंडे के हिसाब से छह महीनों तक अंडे देती रहती है। सेने के लिए आवश्यक गर्मी हो या ना हो मर्द पक्षी अपनी नाक से चुभोकर अंदाज़ा लगाता है। ज़रूरत पड़े तो रेत से भर देता है या अधिक लगे तो रेत को बाहर निकाल देता है। इसके बाद अंडों में से सप्ताह में एक बार बच्चा बाहर आता रहता है।

भारत में राक्षस चिपकलियाँ

हमको विश्वास करना पड़ रहा है कि हमारे देश में भी डिनोजार्स नामक राक्षस चिपकलियाँ हुआ करती थीं। गुजरात के खेरे जिले में शिला के अंशों में परिवर्तित १,००० अंडे पिछले दस सालों में प्राप्त हुए हैं। १२ सें.मी. की ऊँचाई तथा ७ सें.मी. की चौड़ाई के इन अंडों के शिलाओं के अंशों में परिवर्तित होने के कारण बहुत ही वज़नदार लगते हैं। शास्त्रज्ञों का अभिप्राय है कि ये डिनोजार्स अंडे हो सकते हैं। पंजाब विश्वविद्यालय के अनुसंधायकों का मत है कि ये अंडे ६५,०००,००० सालों के पहले के हो सकते हैं।
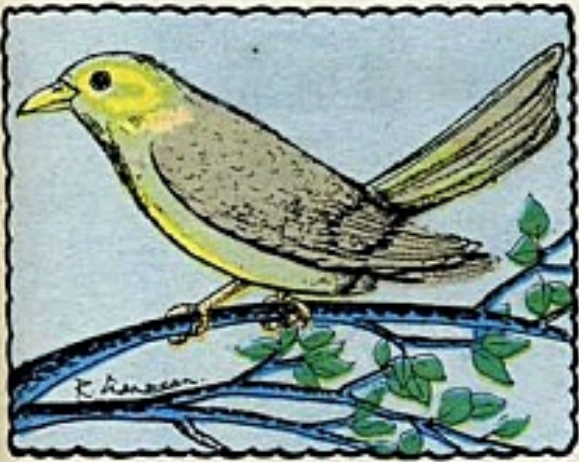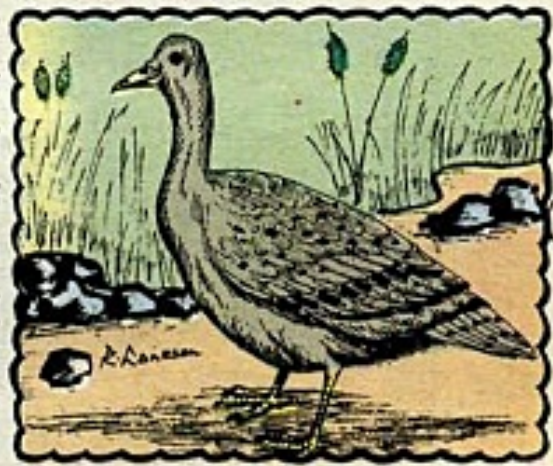
Ya hoo! Swad Ka Jadoo!
FREE!
TRIP TO
Disneyland
WITH
RASNA GENIE
ONE
1st Prize
Trip to Disneyland, Orlando, USA.
TWO
2nd Prizes
Trip to Sentosa Island, Singapore.
FIFTY
3rd Prizes
Trip to Esselworld, Bombay.
Rasna Comix Maker
FREE
If you desire, send 2 empty powder sachets of any Rasna soft drink concentrate flavour and get a Rasna Comix Maker or send 4 empty powder sachets of Rasna soft drink concentrate and get a Rasna Spin-A-Doodle. FREE!
Offer not valid with six-glass Pouch Pack.
Mail in your sachets to : The Rasna Genie Contest, P.O. Box No. 4134, Navrangpura Post Office, Ahmedabad-380 009.
For details contact your nearest Rasna dealer.
Hurry! Contest closes on 31st May, 1994.
Mudra:EAMR:7260

"मेरि"
दुनिया भर की नारियों को, ३१ से अधिक सालों से मनमोहक, खूबसूरत और मजबूत स्वर्णपट्टित ज़ेवरों से सँवार रहे हैं ।
मेरि अब पेश करते हैं चकाचौंध करने वाले रंगबिरंगे और उत्तम डिज़ाइन के ज़ेवर, जो शुद्ध चाँदी पर सोने का पानी चढ़ा कर और अमरीकी हीरे (A.D) से जड़ा कर बनाये गये हैं ।
ज़ेवर वी.पी.पी. द्वारा मँगाये जा सकते हैं । हमें ज़ेवर की संख्या का उल्लेख देते हुये लिखिये । मंदिर की मूर्तियो और भरत नाट्यम के लिए ज़ेवर बनाना हमारी विशेषता है। मुफ्त रंगीन सूचापत्र के लिये लिखिये । कृपया पत्रव्यवहार हिन्दी या अंगरेज़ी में ही करिये ।
No:193 Rs. 300/50
No:154 Rs. 300/50
No:152 Rs. 200/50
No:257 Rs. 350/50
No:232 Rs. 300/50
No:8 Rs. 200/50
No:294 Rs. 250/50
No:123 Rs. 200/50
No:214 Rs. 300/50
No:37 Rs. 200/50
No:952 Rs. 500/50
No:86 Rs. 400/50
A. D.
No:49 Rs. 400/50
No:99 Rs. 600/50
No:206 Rs. 600/50
A. D.
No:834 Rs. 450/50
A. D.
No:862 Rs. 700/50
A, D.
No:876 Rs. 400/50
A. D.
No:830
Rs. 1250/50
A. D.
No:916 Rs. 300/50
MERI GOLD COVERING WORKS
P.O. Box 1405, 18, Ranganathan Street, T. Nagar,
Madras 600 017, Phone: 444671, 442513
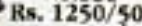
फोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता :: पुरस्कार १००)

पुरस्कृत परिचयोक्तियाँ जुलाई, १९९४ के अंक में प्रकाशित की जाएँगी।

M. Lakshmi

M. Lakshmi

★ उपर्युक्त फोटो की सही परिचयोक्तियाँ एक शब्द या छोटे वाक्य में हों। ★ १० मई' ९४तक परिचयोक्तियाँ प्राप्त होनी चाहिए। ★ अत्युत्तम परिचयोक्ति को (दोनों परिचयोक्तियों को मिलाकर) रु. १००/- का पुरस्कार दिया जायेगा। ★ दोनों परिचयोक्तियाँ केवल कार्ड पर लिखकर इस पते पर भेजें ।

चन्दामामा फोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता, मद्रास-२६.

मार्च, १९९४, की प्रतियोगिता के परिणाम

पहला फोटो : **भय्या मेरे सुंदर सलौने**

दूसरा फोटो : **लाये ढेर सारे खिलौने**

प्रेषक : **सुरभि .के. अग्रवाल** C/O Sri K.R. AGARWAL
INSPECTOR OF CUSTOMS, B/35, SUNMOON SOCIETY
J.P. ROAD, AKOTA, BARODA- P.O. 390020.

चन्दामामा

भारत में वार्षिक चन्दा : रु ४८/-

चन्दा भेजने का पता :

डाल्टन एजन्सीज़, चन्दामामा बिल्डिंग्ज़, वडपलनी, मद्रास-६०० ०२६

Printed by B.V. REDDI at Prasad Process Private Ltd., 188 N.S.K. Salai, Madras 600 026 (India) and Published by B. VISWANATHA REDDI on behalf of CHANDAMAMA PUBLICATIONS, Chandamama Buildings, Vadapalani, Madras 600 026 (India). Controlling Editor: NAGI REDDI.

अपने प्यारे चहेते के लिए जो हो दूर सुदूर
है न यहाँ अनोखा उपहार जो होगा प्यार भरपूर

चन्दामामा

प्यारी-प्यारी सी चंदामामा दीजिए उसे उसकी अपनी पसंद की भाषा में—
आसामी, बंगला, अंग्रेजी, गुजराती, हिन्दी, कन्नड
मलयालम, मराठी, उड़िया, संस्कृत, तमिल या तेलुगु
—और घर से अलग कहीं दूर रहे उसे लूटने दीजिए घर की मौज-मस्ती

चन्दे की दरें (वार्षिक)

आस्ट्रेलिया, जापान, मलेशिया और श्रीलंका के लिए

समुद्री जहाज़ से रु. 105.00 वायु सेवा से रु. **252.00**

फ्रान्स, सिंगापुर, यू.के., यू.एस.ए.,
पश्चिम जर्मनी और दूसरे देशों के लिए

समुद्री जहाज़ से रु. 111.00 वायु सेवा से रु. **252.00**

अपने चन्दे की रकम डिमांड ड्रॉफ्ट या मनी ऑर्डर द्वारा
'चन्दामामा पब्लिकेशन्स' के नाम से निम्न पते पर भेजिए:

सर्क्युलेशन मैनेजर, चन्दामामा पब्लिकेशन्स, चन्दामामा बिल्डिंग्स, वडपलनी, मद्रास-६०० ०२६.